चन्दामामा
अगस्त १९६१
50

कार्निवल उत्सव का समय?

साठे के बिस्कुटों का भी तो यही समय!

नये-नये प्रकार ... पाइनएप्पल क्रीम, रासबेरी क्रीम, चॉकलेट क्रीम व ऑरेंज क्रीम ... साथ ही साथ सभी लोकप्रिय बिस्कुट इस शानदार, नवीनतम डिब्बे में प्राप्य हैं! ... जो भरे रहने पर आदर्श उपहार के रूप में ... और खाली रहनेपर उत्कृष्ट उपयोगी डिब्बे के रूप में काम आते हैं!

IS:1011

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कम्पनी लिमिटेड, पूना-२.

चन्दामामा

अगस्त १९६१

संपादकीय	... १
बेकार की कारीगरी	... २
दक्ष-यज्ञ (पद्य-कथा)	... ५
भयंकर घाटी (धारावाहिक)	... ९
दुल्हिन बदल गई और	... १७
ठगों का गुरु	... २५
मज़दूरी	... ३१
अनायोजित विवाह	... ३३
प्रतिज्ञा पूरी हो गई	... ३९
बालकाण्ड (रामायण)	... ४९
हमारे देश के आश्चर्य	... ५७
प्रश्नोत्तर	... ५८
अन्तिम पृष्ठ	... ६२
फोटो-परिचयोक्ति प्रतियोगिता	... ६३
चित्र-कथा	... ६४

बसंती
LUX
हरा
LUX
नीला
LUX
गुलाबी
LUX
'मेरा मनपसंद
लक्स
इंद्रधनुष के
चार रंगों में
और सफ़ेद भी!'
वहीदा रॆहमान
कहती हैं
LTS. 81-X29 HI
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

अगस्त १९६१

यह हर्ष और सन्तोष का विषय है कि अहिन्दी प्रान्त से चन्दामामा-सी अच्छी हिन्दी पत्रिका प्रकाशित हो रही है। हिन्दी के समर्थक व विरोधी इस बात से पाठ सीख सकते हैं।

पृथ्वीनाथ भार्गव, उपाध्यक्ष इन्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कोन्ग्रेस (यू. पी.)

चन्दामामा एक लोकप्रिय एवं आदर्श पत्रिका है। मैं इसे नियमित रूप से हर महिने पढ़ता हूँ। बच्चों के लिए तो यह एक अमूल्य रत्न है। क्या बूढ़े और क्या बच्चे सभी इसे बड़ी लगन से पढ़ते हैं।

नन्दकिशोर चौधरी, बैतूल गंज

चन्दामामा नियमित रूप से ६ साल से पढ़ रहा हूँ। बच्चों की विशेष रूप से प्रिय पत्रिका होने के कारण मैं हर मास चन्दामामा की दो प्रतियाँ अपने भान्जों के पास भी भेजता हूँ। जहाँ तक मैं समझता हूँ ऐसी चित्रों से सुसज्जित और सरल भाषावाली पत्रिका का अन्यत्र भारत में मिलना असम्भव है।

प्रेमसागर वर्मा, नई दिल्ली

"चन्दामामा" को जैसा मेरा अनुभव है बच्चे बूढ़े जवान सभी पसन्द करते हैं। ये तो साधारणतः हर मास के २० तारिख को आता है चन्दामामा हमारे पास। उस दिन शाम को काफी बच्चे जुट जाते हैं हमारे पास। कहते हैं चन्दामामा मामा की कहानी पढ़कर मुझे सुनाओ। मैं सुनाता हूँ। वे बड़े चाव से ध्यान पूर्वक कहानी सुनते हैं। उनका कहना है "चन्दामामा" में रसगुल्ले से ज्यादा मिठास है।

विनोद कुमार वर्मा, भागलपुर

आपकी "चन्दामामा" पत्रिका में कहानियाँ छोटी होती हैं, इसलिए ये दो तीन दिन में समाप्त हो जाती हैं। इसलिए बाकी सारा महीना मक्खियाँ मारनी पड़ती हैं। मैं आपको यह सुझाव दूँगा कि यदि आप अपनी इस रत्न जड़ित मासिक पत्रिका चन्दामामा को साप्ताहिक बना दें तो यह कितना ही अच्छा होगा।

अवतार कैंथ, शिमला

चन्दामामा की सर्वश्रेष्ठता, एवं लोकप्रियता और सजावट के होते हुए भी हास-परिहास के स्तम्भ के बिना इसमें कुछ कमी का अनुभव होता है। यह स्तम्भ यदि 'गलीवर की यात्रा' के स्थान पर रखा जाय तो अत्युक्ति न होगा बल्कि इसमें चार चाँद लग जायेंगे।

रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, राम सनेहीघाट

"चन्दामामा" जैसी बालोपयोगी एवं ज्ञान वर्धक पत्रिका के व्यवस्थापक, प्रकाशक तथा सम्पादक मंण्डल को उनके इस पुनीत कार्य के लिए बधाई दूं। वस्तुतः "चन्दामामा" ने आज के 'अंतरिक्ष युग' में एक अभिनव क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। मेरा सारा परिवार "चन्दामामा' की प्रत्येक मासिक प्रतियों को एक 'अनमोल निधि' की भाँति रखता है। यही कारण है कि चार वर्ष पूर्व से अब तक की प्रतियाँ सुरक्षित रखी हैं!

विक्रम पाण्डेय, नई दिल्ली

चन्दामामा में एक अभाव दृष्टिगोचर होता है। वह है "यदि आप चन्दामामा में बाल-संसार के विषय में कोई एक कविता छाप दिया करें तो क्या ही अच्छा हो।"

गुरुदास चन्द्र शर्मा, फिरोज़शाह

CIBA

तन्दुरुस्त मुस्कुराहटों के लिये

ताज़ा फलों की सुगंध वाला

बिनाका टूथपेस्ट

"बिनाका रोज़" (गुलाबी) बच्चों के कोमल मसूढ़ों के लिये आदर्श टूथपेस्ट है। दाँतों पर जम जाने वाली पीली परत और सड़न दूर करने के लिये गुणकारी है।

"बिनाका ग्रीन" (हरा) टूथपेस्ट — जिसमें 'क्लोरोफ़िल' भी है — मसूढ़ों की तकलीफ़ें, दाँतों की पीली परत, बदबू और सड़न दूर करने के लिये लाजवाब है।

BINACA

चन्दामामा

संपादक : चक्रपाणी

रामायण के बालकाण्ड के प्रकाशन ने, ऐसा प्रतीत होता है, बहुत से पाठकों को सन्तुष्ट किया है। कई ने आग्रह किया है कि सम्पूर्ण रामायण का क्रमिक प्रकाशन हो।

इस प्रति के साथ एक नया धारावाहिक "भयंकर घाटी" प्रकाशित हो रहा है।

धारावाहिक कथाओं के बारे में हमारे पास जितने पत्र आते हैं, शायद किसी और विषय के बारे में नहीं आते। यह भी पाठकों का मनोरंजन कर सकेगी, हम आशा करते हैं।

इस बार एक और पद्य कथा भी प्रारम्भ हो रही है।

दास और वास की चित्र-कथा, "चन्दामामा" का आकर्षक स्तम्भ है। हम इसबार "गोल मटोल भीम" की कहानी शुरु कर रहे हैं—जो पाठकों के लिए विशेषतः रोचक होगी।

वर्ष : १२ अगस्त १९६१ अंक : १२

CHITRA

बेकार की कारीगरी

एक नगर में एक राजा रहा करता था। अपने राज्य में विद्या और वृत्तियों को प्रोत्साहित करने के लिए वह भिन्न भिन्न वृत्तिवालों को पारितोषक दिया करता। देश में बढ़ई, लुहार, कुमार, जुलाहे, सुनार, शिल्पी, चित्रकार अपनी अपनी चीज़ें लाकर राजा को दिखाते। जब जब उन चीज़ों में कोई अच्छी कारीगरी राजा देखता, तो वह कारीगरों को ईनाम देता।

एक दिन एक गाँव से, एक जुलाहा अच्छा दुशाला बुनकर लाया। राजा ने दुशाला गौर से देखा। उसकी बुनाई की प्रशंसा की। उसने जुलाहे को बहुत-सा ईनाम दिया। यही नहीं, उसने अच्छा दाम देकर वह दुशाला खरीद भी लिया। यह बात पास के गाँववाले रामलाल को मालूम हुई। वह बर्तनों की मरम्मत करके ज़िन्दगी बसर करता था। उसने मन ही मन यों सोचा। "राजा सभी कला और वृत्तियों को पोत्साहित करता है। हर वृत्ति के लोग अपनी बनाई हुई चीज़ें राजा के पास ले जाते हैं। उसकी प्रशंसा पाते हैं, और उससे अच्छे अच्छे ईनाम लेते हैं। होने को तो मेरी भी एक वृत्ति है। मैं भी अपनी वृत्ति में कारीगर हूँ। परन्तु मैं कोई चीज़ बना नहीं सकता। मैं कैसे कोई काम करके, राजा को खुश करके उसका ईनाम पा सकता हूँ! राजा के लोटे, तश्तरियों में घिस घिसकर जब छेद होते हैं, तो उन्हें फेंक दिया जाता है। उनकी मरम्मत नहीं की जाती।"

सोच सोचकर, रामलाल ने एक निश्चय किया। राजा को अपना काम दिखाना है, तो राजा जब देख रहे हों, तभी पात्रों की मरम्मत करूँगा।

रामलाल ने सारे गाँव में घूम-घामकर मरम्मत के लिए बर्तन इकट्ठे किये। कलश कढ़ाई, लोटे, थाल वगैरह। उन सब को गाड़ी पर लादकर वह सीधे राजमहल में गया।

"कौन हो तुम? तुम क्या चाहते हो?" राजा ने रामलाल से पूछा।

"महाराज! आप सभी वृत्तिवालों को ईनाम देकर, उनको प्रोत्साहित कर रहे हैं। मेरे पेशे के बारे में क्या बात है? मेरा काम टाँके लगाने का है। मरम्मत करने का है। चाहे अल्मूनियम का ही बर्तन हो, पुराना हो, टूटा हो, यदि मैंने टाँका लगाया तो कोई नहीं जान सकता कि कहाँ छेद था। जिस बर्तन की मैं मरम्मत करता हूँ वह नया-सा मालूम होता है। मैं अपना हुनर दिखाने के लिए दूर से आया हूँ।" रामलाल ने कहा।

"अच्छा, तो अपना काम दिखाओ।" राजा ने कहा। उसने राजा के सामने ही बर्तनों में बड़े बड़े छेद किये और उनकी मरम्मत करके उन्हें राजा को दिखाया। राजा को आश्चर्य हुआ। कहाँ छेद था, यह बिल्कुल न जाना जा सकता था। राजा ने रामलाल को बहुत-सा ईनाम देकर भेज दिया। रामलाल बर्तन लेकर अपने गाँव गया, उसने सबको उनके बर्तन दे दिये।

रामलाल ने राजा के सामने बर्तनों में जो छेद किये थे वे तो भर दिये परन्तु बर्तनों में उससे पहिले जो छेद थे उन्हें उसने ठीक न किया। वे पहिले की तरह चू रहे थे।

गाँववालों ने रामलाल के पास जाकर कहा—"यह क्या बात है रामलाल! हमारे बर्तन जैसे ले गये थे, वैसे ही वापिस कर दिये। ये सब चू रहे हैं। तुम क्या मरम्मत इसी तरह करते हो? वाह तुम भी

खूब हो।" क्योंकि रामलाल राजा की प्रशंसा पाकर फूला न समा रहा था, इसलिए इन बातों को सुनकर वह खौल उठा।

"अरे, तुम मेरी कारीगरी की नुक्ता चीनी कर रहे हो! मैं कैसा कारीगर हूँ, राजा ने स्वयं देखा है, प्रशंसा की है। मुझे ईनाम भी दिया है। जिस चीज़ की मैं मरम्मत करता हूँ, वह नई हो जाती है, यह राजा भी जानते हैं। आज से वे अपनी चीज़ों की मरम्मत मुझ से ही करवायेंगे।" रामलाल ने कहा।

"हम वह सब नहीं जानते। हमारे बर्तनों की ठीक मरम्मत करते हो कि नहीं!" गाँववालों ने पूछा।

"मेरी मर्ज़ी होगी तो करूँगा। नहीं तो नहीं, तुम कौन होते हो पूछनेवाले!" रामलाल ने कहा।

"तो तुम हमारे बर्तन क्यों ले गये थे! क्या वापिस देने के लिए ही ले गये थे!" लोगों ने पूछा।

उनकी बातों की रामलाल ने परवाह न की। गाँववालों ने राजा के पास जाकर शिकायत की। राजा ने रामलाल को बुलवाया—"तुम टाँका लगाने में कारीगर हो, तुम्हारे कारण लोगों का भला होगा, यह सोचकर मैंने तुम्हें ईनाम दिया। तुम्हारी कारीगरी किस काम की, यदि वह तुम्हारे गाँववालों के ही काम न आई! जो तुम्हें ईनाम दिया गया था, उसे वापिस कर दो।" राजा की इन बातों को सुनकर रामलाल की अक्ल ठिकाने आ गई। उसने राजा से और गाँववालों से क्षमा माँगी, और तब से वह और सावधानी से काम करने लगा।

दक्ष-यज्ञ

प्रथम अध्याय

ब्रह्माजी ने दक्ष-यज्ञ था
एक बार जब ठाना,
आये मुनि औ' सभी देवगण
सजा साज तब नाना।

बैठ गये शिव ब्रह्माजी के
पास लगाकर ध्यान,
मिला सकल देवों-मुनियों को
भी यथायोग्य स्थान।

करने लगे वेद-मंत्रों का
मुनिगण सारे पाठ,
गूँज उठीं उनके गायन से
तुरत दिशाएँ आठ।

धू-धू करने लगी यज्ञ की
अग्नि-शिखा विकराल,
मानों जिह्वा अग्निदेव की
लपक रही हो लाल।

आहुति पड़ती जाती घी की
थी उसमें अविराम,
धूमाच्छादित हुआ शीघ्र ही
नीलाकाश तमाम।

उस अवसर पर वहाँ दक्ष भी
यज्ञ देखने आये,
जिन्हें देखकर सुर-मुनियोंने
तत्क्षण शीश नवाये।

ब्रह्माजी तो जगत्पिता थे
शिव थे ध्यान-गँभीर,
इसलिए रहे वे दोनों ही
बैठे अचल शरीर।

देख तुरत यह कहा दक्ष ने—
"शिव मेरा दामाद,
करे प्रणाम मुझे वह इसकी
रही न उसको याद।

"भारतीभक्त"

गया नहीं जब बैठा उनसे
जरा देर भी शांत,
खड़े हो गये फिर गुस्से में
होकर बहुत अशांत।

बोले वे यों दिखा तर्जनी—
"सुनें सभी रह मौन,
बतलाता हूँ यहाँ घमंडी
शिव बैठा जो कौन!

यही भिखारी वह है जिसको
दी निज कन्या ब्याह,
मेरा ही अपमान करेगा
नहीं पता था आह!

धुत्त नशे में रहता हरदम
नहीं और कुछ काम,
वस्त्र न कोई तन पर इसके
सिर्फ बाघ का चाम।

साथी इसके सभी जंगली
गले सर्प का माल।
नाचा करता श्मशान में
दे डमरू की ताल।

मेरे आते ही सबने तो
दिया मुझे सम्मान,
किंतु न खोली आँखें इसने
रहा दिखाता शान।

भरी सभा में करके मेरा
यों भारी अपमान,
दिखलाया है सचमुच उसने
अपना ही अभिमान!"

इतना कहकर जा बैठे वे
आसन पर चुपचाप,
किंतु हृदय से जलते-भुनते
रहे आप ही आप।

क्रुद्ध दृष्टि से रहे देखते
शिव को बारम्बार,
उर में था अपमान-ज्वाल औ'
आँखों में अंगार।

ब्रह्माजी के पास बैठने
से इतना अभिमान,
करे सभा में यों मेरा ही
यह बैठा अपमान!

मजा चखाता हूँ मैं इसको
भोगेगा परिताप,
यज्ञभाग अब मिले न इसको
देता हूँ यह शाप!"

इतना कहकर जल का छींटा
दिया उन्होंने मार,
और इस तरह गुस्सा सारा
शिव पर दिया उतार।

शाप-वचन सुन दक्षदेव का
हुए लोग सब दंग,
शान्ति सभा की इस कारण ही
हुई उसी क्षण भंग।

जो श्रद्धा रखते थे शिव पर
हुए बहुत ही म्लान—
शिव! शिव! यह क्या किया दक्ष ने
सका न शिव को जान!

लेकिन भृगुमुनि औ' कितने ही
वहाँ उपस्थित लोग,
हुए बहुत ही खुश मन ही मन
पा ऐसा संयोग।

जलन उन्हें होती थी लखकर
शिव का तेजप्रताप,
फूले नहीं समाये वे जब
दिया दक्ष ने शाप।

दोनों पक्षों ने आपस में
छेड़ा वाद-विवाद,
मचा सभा में शोर बहुत ही
फिर तो उसके बाद।

शिव तो बैठे रहे मौन औ'
निश्चल निर्विकार,
किंतु कुपित हो नंदीश्वर ने
भरी एक हुंकार—

"परमेश्वर शिव करें दक्ष को
कहिए भला प्रणाम,
या करे दक्ष ही परमेश्वर को
श्रद्धासहित प्रणाम !

होगा कोई पशु ही वह जो
रखे न इसका ख्याल,
मूर्ख दक्ष यह बजा गया है
व्यर्थ यहाँ पर गाल।

देता हूँ मैं शाप, उसे भी
पछताना अब होगा,
देह रहेगी नर-सी लेकिन
मेंढ़े-सा सिर होगा !"

भृगु को इसपर गुस्सा आया
बोले होकर लाल—
"मैं भी देता शाप सुनो अब
कान खोल तत्काल।

शिवभक्तों का चित्त रहेगा
कभी न अब से शुद्ध,
जड़ समान ही होगा जीवन
होंगे रह-रह क्रुद्ध !"

शापों की यह होड़ देखकर
शिव को हुआ विराग,
चले गये वे उसी समय तब
यज्ञसभा को त्याग।

यज्ञ रहा जारी ब्रह्मा का
कुछ दिन तक अविराम,
पूर्णाहुति के बाद गये सब
अपने अपने धाम।

ब्रभापुर नामक नगर के पास वन में केशव नाम का एक किसान लड़का अपनी गौ-भैंसे चराया करता। उसकी माँ न थी, बूढ़ा पिता अवश्य था। वह बूढ़ा रोज़ सवेरे गौवों का दूध दुहता। दूध शहर में बेचता, जो कुछ मिलता उससे घर के लिए आवश्यक चीज़ें खरीदता।

केशव और उसका पिता वन में एक छोटी-सी झोंपड़ी में रहा करते। जहाँ वे रहते थे, कहीं आस पास कोई गाँव न था।

उस वन के पास बड़े बड़े पहाड़ थे। केशव अपनी गौ भैंसों को पहाड़ के पास ले जाता और वहाँ एक हरे चरागाह में उनको चरने छोड़ देता। तब उसे पहाड़ की चोटी पर चढ़कर इधर उधर देखने की इच्छा होती, परन्तु पिता की आज्ञा थी कि वह पहाड़ पर न चढ़े, क्योंकि उसका विश्वास था कि वहाँ गुफ़ाओं में बड़े बड़े साँप, शेर, भालू वगैरह थे।

एक दिन केशव ने पशुओं को चरने छोड़ दिया। एक पेड़ के सहारे बैठ गया और बाण लेकर दूर के पेड़ के तने पर, और टहनियों पर बैठे पक्षियों पर निशाना लगाकर छोड़ने लगा।

वह यों बाण छोड़ने में मस्त था कि पहाड़ की तलहटी में, चट्टानों की तरफ़ से विचित्र ध्वनि सुनाई दी। केशव एक

क्षण तो डरा, फिर सम्भलकर जिस तरफ़ से ध्वनि आई थी, उस तरफ़ देखने लगा। देखते देखते एक विचित्र जन्तु ऊँचे चट्टान पर खड़ा हो गया। उसका मुख घोड़े के मुँह की तरह था। परन्तु शरीर पर जंगली गधों की तरह बड़ी बड़ी लकीरें थीं। उसके सिर पर लम्बा एक ही एक सींग था।

इस विचित्र जन्तु को देखकर केशव हैरान रह गया। उसने कभी न सुना था कि संसार में ऐसा भी कोई जन्तु होगा। अब क्या किया जाय? बाण चढ़ाकर उसको मार दिया जाये तो अच्छा होगा। इतने में विचित्र जन्तु ने पूँछ से शरीर पोंछते हुए गले पर बालों को झुमाते हुए केशव की ओर सिर मोड़ा। यही अच्छा मौका देख केशव ने धनुष को कान तक खींचा और एक तेज़ बाण उसपर छोड़ा।

इससे पहिले कि बाण उसके शरीर पर लगा, वह विचित्र जन्तु पत्थर पर से एक तरफ़ कूद गया। केशव ने अभी एक और बाण धनुष पर चढ़ाया भी न था कि वह ओर से भागता भागता आया और केशव के हाथ में से उसने बाण निकालकर दूर फेंक दिया।

केशव ने सोचा कि उसपर आपत्ति आनेवाली थी। उसी क्षण उसमें जाने कहाँ से धैर्य-सा आ गया। जब उसने पेड़ के पास रखी अपनी छड़ी उठानी चाही तो उसने देखा कि वह जन्तु गौ से भी अधिक सीधा था। उसने अपना मुख केशव के कन्धे पर रखा।

केशव को और आश्चर्य हुआ। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि इन पशुओं में शायद मनुष्यों के मानसिक भावों को भाँपने का दिव्य ज्ञान है। कुछ भी हो, इस जन्तु को

देखकर ऐसा नहीं लगता कि वह मेरी हानि करेगा। यह सोच केशव उठा और धीमे धीमे उसका गलकम्बल सहलाने लगा। इसपर वह विचित्र जन्तु पैर ऊपर नीचे करके घोड़े की तरह हिनहिनाने लगा।

"यह शायद घोड़े की जाति का मालूम होता है।" केशव ने सोचा। इस बात के उसके मन में आते ही उसपर सवारी करने की भी इच्छा हुई। तुरत वह उसकी पीठ पर चढ़ गया।

विचित्र जन्तु इस बार और जोर से हिनहिनाया। धीमे धीमे कदम रखता, वह पहाड़ की ओर चला। बिना लगाम और जीन के इसपर सवारी की जा सकती थी, केशव ने सोचा। ज्यों ज्यों वह पहाड़ के पास आता गया त्यों त्यों उसकी चाल तेज़ होती गई। केशव गिरने ही वाला था कि उसने उसके गले के बाल पकड़ लिये। इतने में वह विचित्र पशु एक पत्थर पर कूदा। केशव डरा। "ओहो, यह मुझे पहाड़ की ओर ले जाने की सोच रहा है। वहाँ गुफ़ाओं में शेर, भालू—खतरा है।" वह यह सोचता उस विचित्र पशु पर से वह कूद पड़ा।

केशव के नीचे कूदते ही, विचित्र पशु भी नीचे कूदा। वह केशव के चारों ओर घूमने लगा। उसे न सूझा कि क्या करे, वह पैर घसीटता घसीटता उस पेड़ के पास गया जहाँ वह प्रायः बैठा करता था। विचित्र जन्तु भी उसके पीछे पीछे गया।

केशव को चिन्ता सताने लगी। संसार की बात तो नहीं कही जा सकती, पर जिस प्रदेश में वह था, वहाँ उसने ऐसे जन्तु के बारे में नहीं सुना था। वह पहाड़ पर उसके पास आया। जब उसने उस पर सवारी करने की कोशिश की तो उसने

उसको पहाड़ की ओर ले जाने की कोशिश की। साफ़ है कि उसकी रहने की जगह कहीं पहाड़ पर है। यदि इसे ले जाकर ब्रह्मपुर में बेचा गया तो बहुत-सा धन मिलेगा।

केशव इसी उधेड़बुन में था कि विचित्र जन्तु आकर उसकी गौ भैंसों के साथ चरने लगा। पहिले तो गौवें उसे देखकर डरकर दूर चली गईं, फिर वे उसके साथ चरने लगीं। केशव ने सोचा कि शाम तक वह गौवों के साथ चरता रहेगा, फिर सूर्यास्त के समय वह वापिस पहाड़ पर चला जायेगा। परन्तु उसने ऐसा न किया। जब अन्धेरा होने लगा और वह अपनी गौ भैंसों को घर ले जाने लगा, तो वह भी उनके साथ झोपड़ी के पास आया। केशव ने उन सबको एक जगह इकट्ठा किया, उनके सामने चारा डालकर, चारों ओर आग जलाकर वह चला गया। क्या इस पशु के बारे में पिता से कहूँ? या न कहूँ? सोचते सोचते उसने भोजन किया फिर वह आराम से सो गया।

अगले दिन सवेरा हो रहा था कि केशव के पिता ने उसके बिस्तर के पास आकर उसका कन्धा पकड़कर उठाया— "केशव, उठो उठो, बड़ी आपत्ति आ पड़ी है। रात हमारे पशुओं के झुन्ड में एक भेड़िया आया। जब चारों ओर आग थी तो कैसे वह उनमें पहुँच गया....!"

केशव तपाक से उठा। उसे तुरत वह विचित्र पशु याद आया, जो पिछले दिन पशुओं के साथ आया था। पिता उसे भेड़िया समझ रहे हैं क्या? वे बूढ़े हो गये हैं, नज़र भी कम हो गई है, पर उस पशु को देखकर उन्होंने कैसे भेड़िया समझा? कहाँ वह विचित्र पशु

रात में भेड़िया तो नहीं बन गया था? और हमारे पशुओं को खाकर अब नम्पत हो गया है!

"उस भेड़िये ने कितनी गौवों को मार दिया है?" केशव ने अपने पिता से पूछा।

"भगवान की दया से ऐसा तो कुछ नहीं हुआ। भेड़िया मुझे देखते ही आग फांदकर जंगल की ओर भाग गया।" पिता ने कहा।

केशव ने लम्बी साँस छोड़ी। "शायद तुमने भेड़िया नहीं देखा था? कल शाम गौ भैंसों के साथ एक विचित्र पशु आया था।" उसने पिता से उस विचित्र पशु के बारे में सब कुछ बताया।

पिता ने चकित होकर पूछा—"तुम जिस विचित्र पशु के बारे में कह रहे हो, वह तो मुझे कहीं झुन्ड में दिखाई नहीं दिया। और यह भी कह रहे हो कि वह पहाड़ पर से आया था, इसलिए ज़रा सम्भलकर रहना। विचित्र पशु के रूप में शायद कोई मायावी राक्षस ही हो।"

पिता की बात सुनकर केशव ने ज़ोर से हँसते हुए कहा—"यदि राक्षस है, तो वह निज रूप में आकर ही मुझे पकड़ सकता था। उसको इस विचित्र रूप को धारण करने की क्या आवश्यकता थी! तुमने सचमुच भेड़िया ही देखा था। इसमें सन्देह नहीं है। जो विचित्र जन्तु अपनी गौ भैंसों के साथ आया था, वह रात को ही वन में चला गया होगा।"

फिर पिता दूध की बेहंगी लेकर शहर चला गया। केशव ने जल्दी जल्दी मुँह धोया, स्नान किया। बासा भात खाकर गौवों को पहाड़ के पास चरागाह ले जाने के लिए झोपड़ी से बाहर आया।
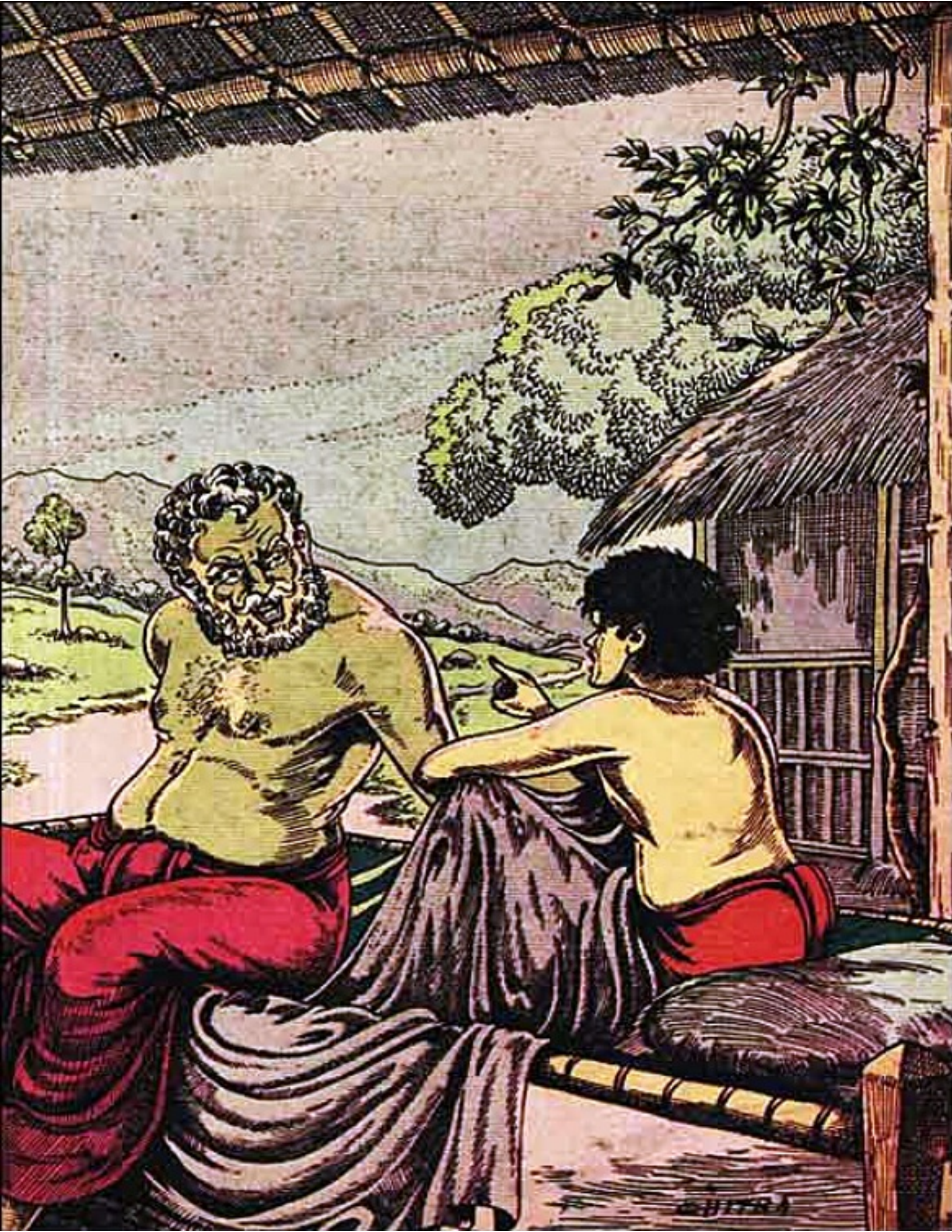
गौवों में कई जुगाली कर रही थीं। कई रम्भा रही थीं। परन्तु कहीं भी विचित्र जन्तु का पता न था।

केशव गौ को पहाड़ की तलहटी में ले गया और जहाँ वह प्रायः बैठा करता था उसी पेड़ के सहारे बैठा वह पहाड़ की ओर धाँय धाँय बाण छोड़ रहा था। उसे यकायक ऐसा लगा जैसे वह विचित्र जन्तु उसके पीछे हिनहिना रहा हो। केशव ने चौंककर पीछे की ओर देखा। विचित्र पशु पिछले पैरों के बल खड़ा और ज़ोर से हिनहिनाया और उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"अरे तुम फिर आ गये! मैं तो तुम्हारी बात ही भूल गया था।" केशव ने इस तरह कहा जैसे वह किसी आदमी से बात कर रहा हो।

विचित्र पशु ने सिर हिलाया। केशव के आश्चर्य की सीमा न थी। इतने में उसको पिता की बात याद आई—"कहीं यह कोई मायावी राक्षस तो नहीं है?" इतने में वह विचित्र पशु इस तरह घूमा जैसे उसको उसके मन की बात मालूम हो गई हो और पशुओं के झुन्ड की ओर चल पड़ा। केशव ने उसकी ओर थोड़ी देर देखा। फिर उठकर धनुष पर बाण चढ़ाकर वह टहनियों पर छोड़ने लगा।
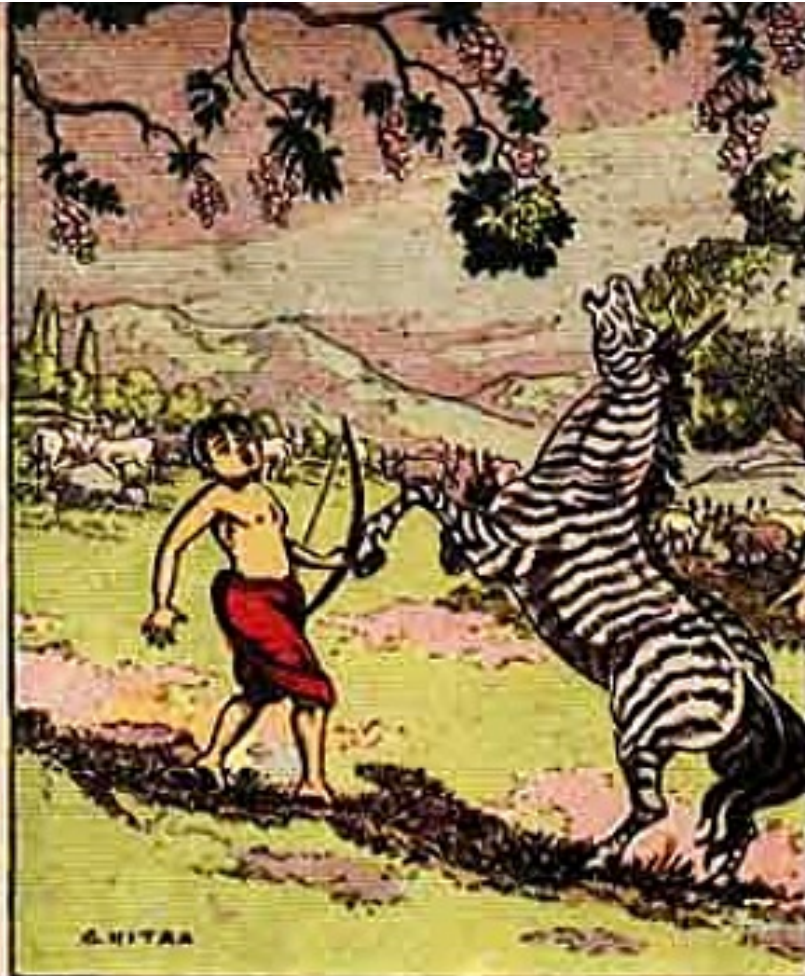
इस तरह कुछ समय बीता। दूरी पर कहीं घोड़ों के आने की आहट हुई। देखते देखते दो घुड़सवार केशव के पास आये। उसकी ओर आश्चर्य से देखकर उनमें से एक ने कहा—"यहाँ तो कोई एकलव्य बैठा मालूम होता है, महा सेनापति।"

"एकलव्य? फिर देरी की क्या बात है? उसकी अंगुलियाँ काट दो। कहता

कीमती पोषाक पहिने, सजे सजाये घोड़े पर सवार हो एक आदमी आया।

"अरे यह भी क्या घमंड है! उठते क्यों नहीं हो? जानते हो कौन आया है! ब्रह्मपुर का महा सेनापति।" घुड़सवार ने कहा।

केशव झट खड़ा हो गया। उसने ब्रह्मपुर के सेनापति को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। सेनापति ने उसे, उसके धनुष-बाण और तरकश को गौर से देखते हुए पूछा—"अरे, तुम कौन हो? क्षत्रिय हो? किसके प्राण लेने के लिए यों धनुर्विद्या सीख रहे हो?"

"जी नहीं, मैं किसान का लड़का हूँ। इस संसार में मेरा कोई शत्रु नहीं है। समय काटने के लिए मैं ये धनुष-बाण साथ ले आया हूँ। वह देखिये, पहाड़ की तलहटी में मेरी गौ भैंसों का झुन्ड।" केशव ने विनयपूर्वक कहा।

सेनापति सिर मोड़कर गौ भैंसों की ओर देखने ही वाला था कि घुड़सवारों में से एक ने चिल्लाकर कहा—"महा सेनापति, देखिये देखिये पंचकल्याणी। देवताओं के घोड़े की तरह है।" उसने विचित्र पशु की ओर इशारा किया।

सेनापति ने चकित होकर उस विचित्र पशु की ओर एक क्षण देखा। "वह पंचकल्याणी नहीं है। देवताओं का घोड़ा भी नहीं है। वह तो कोई जंगली गधा मालूम होता है। जंगली गधा इतना ऊँचा नही होता। एक ही सींग क्यों है! कभी सुना भी न था कि ऐसा जानवर होता है! उसे इधर हाँककर तो लाओ।" उसने अपने सैनिकों से कहा। (अभी है)

दुल्हिन बदल गई और...

कोशल देश के राजा का लड़का, कमलाकर सौन्दर्य में कामदेव की तरह था। उसी नगर में एक भाट रहा करता था। वह देश में भ्रमण करता करता विदिशा नगर में गया। वहाँ वह एक नाटकाचार्य के घर अतिथि बना।

एक दिन नाटकाचार्य ने भाट से कहा—"कल रात राज सभा में राजकुमारी मेरा सिखाया हुआ नया नृत्य दिखाने जा रही है।" नृत्य देखने के लिए नाटकाचार्य के साथ भाट भी राज सभा में गया। राजकुमारी हंसावली ने राज सभा में आकर अपना नया नृत्य आरम्भ किया। वह रम्भा और उर्वशी से भी अधिक सुन्दर थी। उसको देखते ही भाट ने सोचा—"क्या अच्छा हो, यदि इस लड़की का हमारे राजकुमार कमलाकर से विवाह हो।"

भाट बड़ा धुन का पक्का था। उसने सोचा कि इसके लिए उसे ही काम करना होगा। उसने राज सभा के समाप्त होने के पूर्व, एक कपड़े पर लिखा—"अगर कोई खींच सके, तो मेरे चित्र खींचे।" उसे लेकर वह राजद्वार के पास बैठ गया।

यह बात राजा को भी पता लगी। उसने सोचा कि यह कोई बड़ा चित्रकार था। उसने उसको अपनी लड़की के कमरे की दीवारों पर चित्र बनाने के लिए नियुक्त किया। भाट ने हंसावली के शयनकक्ष की दीवारों पर कमलाकर और उसके परिवार वालों का चित्र बनाया।

यदि उसने स्वयं कहा कि वह चित्र फलाने राजकुमार का था, तो सम्भव था कि राजकुमारी समझे कि वह उसे धोखा दे रहा था। हंसावली ने भी स्वयं न पूछा

शिवशंकर

"अरे, यह पगला यह क्या कह रहा है?" हंसावली ने भाट से पूछा।

"वह सच ही कह रहा है। कभी इसने उस राजकुमार को देखा होगा। इसलिए ही उनके चित्र देखकर वह उन्हें पहिचान सका।" भाट ने कहा।

इस तरह हंसावली के मन में कमलाकर के प्रति प्रेम अंकुरित हुआ और वह दिन प्रति दिन बढ़ता गया।

भाट कोशल नगर गया। राजकुमार को उसने जो कुछ गुज़रा था, बताया। कमलाकर के मन में भी हंसावली के प्रति प्रेम पैदा हुआ और वह भी बढ़ता गया।

इसके कुछ दिनों बाद कमलाकर से, उसके पिता ने कहा—"बेटा, अब सयाने हो गये हो। दिन रात यहाँ विनोद विलास का आनन्द लेने की अपेक्षा जाकर शत्रुओं को क्यों नहीं जीतते? सुना जाता है कि हम पर चढ़ाई करने के लिए अंगदेश का राजा तैयारियाँ कर रहा है। सेना के साथ जाओ और उस अंगदेश के राजा को जल्दी हरा दो।"

विदिशा नगर जाने के लिए यह अच्छा मौका मिला। इसलिए कमलाकर

कि वह चित्र किसका था। भाट ने एक और बात सोची। एक विश्वासपात्र मित्र की मदद उसने माँगी। उसे पहिले ही बता दिया कि वह क्या चाहता था।

भाट के मित्र ने बावले का अभिनय करते हुए राजकुमारी को कुछ देर हँसाया। यह सुन हंसावली ने उसको अपने महल में बुलवाया। उसने राजकुमारी के कमरे में भाट के बनाये हुए चित्रों को देखते ही कहा—"कोशल देश का राजकुमार, कमलाकर यहाँ कैसे आ गया? उसके जितना सुन्दर इस संसार में कोई नहीं है।"

ने पिता के आदेशानुसार अंगदेश पर आक्रमण किया। उसने युद्ध में अंगदेश के राजा को पराजित ही न किया अपितु उसको जीवित कैद भी कर लिया। सैनिकों को उसे सौंपकर राजा के पास भेजते हुए कहा—"मैं अपने अन्य शत्रुओं को जीतकर ही वापिस लौटूँगा।"

फिर कमलाकर, मार्ग में जो जो देश आये, उनको जीतता, अपनी सेना को बढ़ाता विदिशा नगर भी पहुँचा। उसने वहाँ नगर के बाहर पड़ाव डाला। राजा के पास उसने दूत भेजा।

हंसावली के पिता को पहिले ही खबर मिल गई थी कि कोशल देश का युवराज समीपवर्ती देशों को जीतता आ रहा था। जब उसे मालूम हुआ कि वह बड़ी सेना लेकर उसके नगर में आया था, तो वह घबरा गया।

परन्तु कमलाकर के दूत ने उससे युद्ध के बारे में बात न करके, यह कहा—"हमारे कमलाकर युवराज चाहते हैं कि आप अपनी लड़की हंसावली का विवाह उनसे करें।" हंसावली के पिता की जान में जान आई। वह तुरत कमलाकर को देखने गया। "बेटा, यदि तुम किसी को भेजते तो यह कार्य सम्पन्न हो जाता। तुम ही आये। तुम से अच्छा वर मेरी लड़की के लिए कहाँ मिलेगा? मेरी लड़की महिमावाली है। वह बचपन से ही विष्णु की आराधना करती आई है। इसलिए उसके छूते ही, चाहे ज्वर कैसा भी हो चला जाता है। यह मेरा अपना निजी अनुभव है।" उसने कहा।

अपनी लड़की के विवाह का मुहूर्त निश्चित करके, वह घर वापिस गया। हंसावली को विश्वास न हुआ कि उसका

और कमलाकर का विवाह निश्चित हो गया था। वह जिससे विवाह करने के लिए इतने दिनों से सपना ले रही थी, उससे ही इस तरह अकस्मात् विवाह निश्चित हो जाना क्या सम्भव है? क्या यह वही राजकुमार है....जो उसके कमरे की दीवारों पर चित्रित है....या और कोई? क्या पिता मेरा विवाह करने के लिए, इसलिए मान गये हैं क्योंकि उनके साथ बड़ी सेना है? हंसावली के मन में ये सन्देह उठे।

हंसावली की दो सहेलियाँ थीं। एक का नाम कनकमंजरी था और दूसरी का अशोककरिका। उसने कनकमंजरी से कान में कहा—"तुम उस राजकुमार के पास जाओ। यह मालूम करके आओ कि क्या वह वही कमलाकर है, जिसके चित्र मेरे कमरे की दीवारों पर हैं!"

कनकमंजरी, दाढ़ी, मूँछ लगाकर, गेरुवे वस्त्र पहिनकर रुद्राक्ष माला डालकर, मृगचर्म आदि लेकर, योगी के वेश में कमलाकर के यहाँ गई। वहाँ उसने उसका आतिथ्य भी पाया। परन्तु उसको देखते ही कनकमंजरी उस पर मुग्ध हो गई। उसने स्वयं उससे विवाह करने की सोची। इसलिए कनकमंजरी ने घर जाकर हंसावली से कहा—"सखी! तुम सचमुच कितनी अभागिन हो। जब मैं पहुँची, तो तुम्हारे होनेवाले पति को रस्सियों से बाँधकर, लोग उसे डाँट फटकार रहे थे। उस पर भूत चढ़ गया है। मुझे देखते ही पूछा कि क्या मैं भूत वैद्य जानती हूँ। मैंने उसको दो चार तावीज दिये और यह कह चली आई कि फिर आऊँगी।"

ये बातें सुनकर हंसावली घबरा उठी। "तो इस विवाह को कैसे रोका जाये?" उसने पूछा।

"यदि हम एक बात करें तो यह शादी नहीं हो पायेगी। किसी और को तुम्हारा वेश पहिनाकर, विवाह वेदिका पर बिठाया जाय और हम दोनों अरण्य मार्ग से कहीं चले जायें।" कनकमंजरी ने कहा।

"और किसी से यह क्यों करवाया जाये! तुम ही यह वेश धरो। मैं पहिले ही जंगल में चली जाऊँगी। उसके बाद तुम भी बचकर फिर चले आना।" हंसावली ने कहा। वह कनकमंजरी की बातों में आ गई।

विवाह का दिन आया। हंसावली के कमरे में उसके साथ कनकमंजरी और अशोककरिका ही थीं। कनकमंजरी ने दुल्हिन का वेश पहिना। हंसावली ने उसके कपड़े पहिन लिये।

कनकमंजरी ने हंसावली से कहा—"सखी! मुहूर्त समीप आ रहा है। तुम पश्चिम के द्वार से एक कोस दूर जाओ। वहाँ एक बड़ा पेड़ है। उसमें एक बड़ा खोल है। उसमें छुप जाना। जल्दी ही मैं तुमसे आ मिलूँगी।" कहकर उसने उसको भेज दिया।

रात का समय था। हंसावली, अन्धेरे में किसी को न दिखाई दी। पश्चिम के द्वार से कोस भर जाकर कनकमंजरी के बताये हुए पेड़ के पास पहुँची। परन्तु उस अन्धेरे में उस पेड़ के खोल में जाना उसे अच्छा न लगा। वह पास ही एक बढ़ के पेड़ पर चढ़ गई। और कनकमंजरी के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

उधर कनकमंजरी ने अशोककरिका से कहा—"राजकुमारी को यह सम्बन्ध पसन्द न था, इसलिए ही हमें यह चाल चलनी पड़ी। तुम यह किसी से न कहना। मैं

तुमको अपने साथ ले जाऊँगी और तुम्हारा उपकार करूँगी।"

फिर लोग वधू को बुलाकर ले गये। कनकमंजरी ने चूँकि परदा डाल रखा था और अन्धेरा था, इसलिए कोई यह न जान सका कि वह हंसावली न थी।

कमलाकर सोच रहा था कि वह हंसावली से विवाह कर रहा था। पर वस्तुतः उसका विवाह हो रहा था कनकमंजरी से। तुरत वह अपनी पत्नी और सेना के साथ अपने देश चला गया। पत्नी और पति जिस हाथी पर

सवार थे, वह पश्चिम द्वार से निकला, जिस रास्ते पर हंसावली गई थी, उसी रास्ते से चलता उस बड़े पेड़ के पास पहुँचा। कनकमंजरी ने कमलाकर को इतने ज़ोर से पकड़ लिया, जैसे किसी चीज़ से डर गई हो।

"क्यों यों डर रहे हो?" कमलाकर ने पूछा। कनकमंजरी ने कहा—"कल रात मुझे एक खराब सपना आया कि मैं इस पेड़ के पास आई हूँ और उसमें से एक पिशाची निकली। उसने मुझे पकड़ लिया। वह मुझे निगलने को ही थी कि इतने में एक ब्राह्मण आया, उसने मेरी रक्षा की और उसने पिशाची के साथ उस पेड़ को जला दिया। इसलिए इस पेड़ को देखते ही मैं डर गई।"

यह सुनकर कमलाकर ने अपने सैनिकों से कहा—"इस पेड़ को जला दो। यदि इस पेड़ में से कोई पिशाच निकले तो उसको भी आग में जला देना।"

जब वह पेड़ जलकर राख हो गया। तो कनकमंजरी ने सोचा कि हंसावली का पिंड हमेशा के लिए छूट गया था। वह बड़ी खुशी हुई। कमलाकर उसके साथ

अपने नगर में गया। पिता से उसने अपना राज्याभिषेक भी करवाया। कनकमंजरी को मुख्य रानी बनाकर वह सुखपूर्वक राज्य करने लगा।

वड़ के पेड़ पर से हंसावली ने कनकमंजरी का किया हुआ धोखा, अपनी आँखों देखा और कानों सुना। उसे अपनी दुस्थिति पर बड़ा शोक हुआ। उसने उस आग में आत्महत्या करने की भी सोची। पर मरकर वह कर ही क्या सकती थी, इसलिए यह प्रयत्न छोड़कर, वह बिना किसी को दीखे, निर्जन वनों में से होते-होते फलों के बगीचे में गई। वहाँ वह अपने इष्ट देवता विष्णु की आराधना करती, फलों पर गुज़ारा करती, तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगी।

इतने में कमलाकर को ज्वर आने लगा। बहुत चिकित्सा की गई, पर कोई फायदा नहीं हुआ। यह ज्वर देख कनकमंजरी डर गई। वह हंसावली की तरह अभिनय कर रही थी। उसके ससुर ने बताया भी था कि उसके छूते ही चाहे ज्वर कैसा भी हो, चला जाता है। ये भूल गये हैं। उनको यह याद आने से पहिले, उनका ज्वर यदि न गया, तो यह मालूम हो जायेगा कि मैं हंसावली नहीं हूँ।

उसे तो यूँ भी डर लगा रहता कि कब उसका रहस्य अशोककरिका खोलती है। एक ही चोट में अशोककरिका को खतम करने और कमलाकर का ज्वर ठीक करने की उसने एक चाल सोची।

एक दिन रात को वह अशोककरिका को साथ लेकर एक उजड़े शिवालय में गयी। वहाँ बकरी की बलि दी। बकरी के आँखों में धुआँ दिया। फिर उसने ज्वर पीड़ित व्यक्ति का चित्र बनवाया। उसको

साष्टांग नमस्कार करने के लिए कहा, अशोककरिका ने, क्योंकि कनकमंजरी की चाल न जानती थी, इसलिए वैसा ही किया। तुरत कनकमंजरी ने तलवार उठाई और उसका गले पर चोट मारी।

परन्तु वह चोट अशोककरिका के गले पर न लगी। उसके कन्धे पर लगी, थोड़ा-सा घाव भी हो गया। वह जोर से चिल्लाती बाहर आई। ये बातें सुनकर जल्लाद भागे भागे आये। अशोककरिका द्वारा उन्होंने मन्दिर में कनकमंजरी के बारे में मालूम किया। वहाँ का दृश्य देखकर उन्होंने अनुमान किया कि वह नर बलि देना चाहती थी। इसलिए कनकमंजरी को खूब पीटा और उसको पकड़कर कोतवाल के पास ले गये। पर इससे पहिले कि कमलाकर उसकी सुनवाई करता, वह जल्लादों के चोट के कारण मर गई।

कनकमंजरी के धोखे के बारे में जब अशोककरिका ने बताया, तो कमलाकर को लगा कि हंसावली जीवित थी। यदि वह पेड़ के खोल में ही थी, तो वह आग देखकर बाहर चली आती। उसमें ही न मरती। उसको ढूँढकर लाने के लिए उसने चारों ओर आदमी भेजे। उनमें से कई उस फल के बगीचे में आये, जहाँ हंसावली रह रही थी और यह भी जान गये कि वह हंसावली ही थी।

उनके द्वारा हंसावली जान गई कि जो धोखा कनकमंजरी ने किया था, वह सबको मालूम हो गया था। वह उनके साथ कमलाकर के पास गई। उसके छूते ही उसका ज्वर जाता रहा।

फिर कमलाकर और हंसावली का वैभवपूर्वक विवाह हुआ और वे दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

ठगों का गुरु

बगदाद में एक अमीर व्यापारी रहा करता था। वह सारी दुनियाँ घूम आया था। पर पहाड़ों में स्थित एक नगर में कभी न गया था। एक बार उस नगर से आये हुए एक यात्री से मिलने का मौका मिला।

"उस नगर में किस चीज की अधिक माँग है?" व्यापारी ने यात्री से पूछा। यात्री ने बताया कि चन्दन की लकड़ी अच्छे दाम पर बेची जा सकती थी।

व्यापारी अपना सारा धन लगाकर, चन्दन की लकड़ी खरीद कर उस पहाड़ के नगर की ओर निकल पड़ा। वह नगर में पहुँचनेवाला था कि सामने से एक बुढ़िया भेड़ों को हाँकती आ रही थी। उसने सोचा कि व्यापारी परदेशी था। उसने कहा—"खबरदार रहना भाई। इस नगर के लोग बड़े चोर हैं। परदेसियों को तो बहुत ठगते हैं।" वह चली गई।

व्यापारी जब नगर के द्वार पर पहुँचा तो पूरी तरह अन्धेरा हो गया था। फाटक बन्द कर दिये गये थे। रात उसने फाटक के बाहर ही काट दी। अगले दिन सवेरा होते ही नगर में प्रवेश किया। वह अभी फाटक से कुछ दूर गया था कि एक आदमी ने उससे कुछ पूछा-ताछा।

"मैं बगदाद का हूँ। यह सुनकर कि चन्दन की लकड़ी का अच्छा दाम है, मैं यहाँ वह बेचने आया हूँ।" व्यापारी ने कहा।

"किसने बताया है यह! हमारे यहाँ चन्दन की लकड़ी, घर में रसोई आदि के लिए ईन्धन के अलावा किसी और काम के लिए नहीं बरती जाती। क्या घर के ईन्धन के लिए कोई बड़ा खासा दाम देता है!" कहता वह अजनबी अपने काम पर चला गया।

यह बात भी सही थी या झूट, व्यापारी न जान सका। एक सराय में, एक कमरा लिया। जब वह उस सराय के आँगन में गया, तो उसने एक विचित्र बात देखी। जिसने नगर के फाटक के पास उससे बात की थी, वह और एक और आदमी, बाहर चुल्हा बनाकर आग बना रहे थे। वे ईन्धन के लिए चन्दन का ही उपयोग कर रहे थे। यह देख व्यापारी घबरा गया, जो उस आदमी ने कहा था, वह ठीक ही था। अगर उसने सारा माल भी बेचा तो सिवाय थोड़ी बहुत चान्दी के कुछ नहीं हाथ आयेगा। व्यापारी जब पास आये, तो उन आदमियों ने उससे पूछा—"क्या अपना माल बेचोगे?"

"क्या दाम दोगे?" व्यापारी ने पूछा।

"वह ऐसा कौन-सा बड़ा माल है। जो आप माँगेंगे, वह देंगे।" उन्होंने कहा। व्यापारी यह बात मान गया और जो कुछ चन्दन वह लाया था, उसने उनको दे दिया।

वह फिर नगर देखने गया। रास्ते में उसे एक काना मिला। उसका हाथ ज़ोर से पकड़कर वह चिल्लाया—"इसी ने ही मेरी आँख फोड़ी है। अब तुम छूटकर न भाग सकोगे।" लोग जमा हो गये। "तुम कौन हो, मैं नहीं जानता। मैंने तुम्हें देखा तक नहीं है। मैं पहिली बार इस शहर में आ रहा हूँ। मैं तुम्हारी आँख कैसे फोड़ सकता हूँ!" उस व्यापारी ने कहा। उसने अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की।

परन्तु जमा हुए लोग काने की तरफ़दारी करने लगे। उन्होंने निर्णय किया कि व्यापारी को काने को हरजाना देना होगा। व्यापारी ने यह कहकर कि कल देखा जायेगा, बात टाल दी।

परन्तु इस गड़बड़ी में व्यापारी की एक चप्पल टूट गई। उसने पास ही बैठे मोची से चप्पल ठीक करने के लिए कहा।

"क्या दोगे?" मोची ने पूछा।

"मैं, तुम्हें खुश करूँगा, ठीक है न?" व्यापारी ने कहा। मोची यह मान गया। क्योंकि एक चप्पल पहिनकर चला नहीं जा सकता था इसलिए वह पास ही जुआखोरों का जुये का खेल देखता खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद पास खड़े आदमी ने व्यापारी से भी बाजी लगाने के लिए कहा। व्यापारी ने बाजी लगाई और थोड़ी देर में वह सब से हार गया, सबको उसे कुछ न कुछ देना था। जिस व्यक्ति ने उसे जुये में उतारा था, उसने उससे कहा—"क्या समुद्र का सारा पानी पीओगे? या जो कुछ तुम्हारे पास है, हमें दोगे इनमें से कोई एक बात तय कर लो।"

"कल तक मुझे समय दो, तो फैसला कर लूँगा।" उनसे व्यापारी ने कहा। अपनी बुरी हालत पर सोचता, वह गली गली घूमने लगा। उसे एक जगह वह बुढ़िया फिर दिखाई दी। व्यापारी का मुँह देखते ही, वह जान गई कि उस पर क्या क्या गुजरी थी। उसने भी अपने सारे अनुभव पूरी तरह उसे सुनाये।

सब सुनकर उसने कहा—"बेटा, देखा, इस नगर के लोग निरे पापी हैं। मैंने तुम्हें पहिले ही खबरदार किया था, अब तुम उनकी चालाकी के शिकार हो गये हो। यहाँ चन्दन के गट्ठर का दाम दस सोने की मुहरें हैं। जो कुछ चन्दन तुम्हारे पास था, उसे बेचते तो तुम्हें बहुत सा सोना मिलना चाहिए था। जो हुआ, सो हुआ। अब भी यदि मेरे कहे मुताबिक किया, तो तुम्हारा शायद नुक्सान कम

हो। अन्धेरा होने के समय, नगर के द्वार के पास गये तो वहाँ तुम्हें अन्धा स्वामी दिखाई देगा। सच कहा जाये तो वह स्वामी नहीं है। वह इस शहर के सब ठगों का गुरु है। अन्धेरा होने के बाद, सब ठग उसके पास आते हैं और उसकी सलाह माँगते हैं और जो जो कारनामे वे करते हैं, उनको सुनाते हैं। यदि तुमने छुपे छुपे उनकी बातचीत सुनी, तो तुम्हारा फायदा हो सकता है।" बुढ़िया ने कहा।

अभी अन्धेरा न हुआ था कि व्यापारी नगर के द्वार के पास गया। द्वार के बाहर एक अन्धा साधु, जैसा कि बुढ़िया ने बताया था, एक पत्थर के सहारे ऐसा बैठा हुआ था, मानों समाधि में हो। व्यापारी पत्थर के पीछे खड़ा हो गया। अन्धेरा होते ही नगर के ठग एक-एक करके भालू की तरह उसके पास आते और जो कुछ दिन में किया था, वे सुनाते। उनमें वे चार आदमी भी थे, जिन्होंने व्यापारी को ठगा था। एक एक की बात सुनकर साधु उनकी आलोचना करता, व्यापारी वह सब सुनता आ रहा था।

ठगों में से एक ने कहा—"स्वामी, मैंने एक परदेशी व्यापारी के पास चन्दन बड़े सस्ते में खरीदा है।"

"किस दाम पर?" साधु ने पूछा।

"इस शर्त पर कि चन्दन के भार के बराबर, जो कुछ भी व्यापारी माँगेंगे, उसे दूँगा।" ठग ने कहा।

"इसमें तो व्यापारी का ही लाभ है।" स्वामी ने कहा। "यह कैसे स्वामी! यदि उसने चन्दन के बराबर सोना भी माँगा, तो मुझे ही फायदा है।" ठग ने कहा।

"हाँ, यदि वह चन्दन के भार के बराबर मक्खियाँ माँगे और कहे कि उनमें आधी जंगली हों और आधी मामूली। आधी

मादा और आधी नर, तब तुम्हारी गति क्या होगी?" साधु ने पूछा।

ठग सोचता सोचता चला गया। फिर काने ने आकर कहा—"स्वामी! आज एक परदेसी व्यापारी को मैंने उल्लू बनाया। मैंने यह शिकायत की कि मेरी आँख इसी ने फोड़ी है। मैंने कहा कि उस आदमी को या तो अपनी आँख देनी होगी। नहीं तो अपना सब कुछ देना होगा।"

"तुम मूर्ख हो! वह व्यापारी तुम्हें आसानी से मूर्ख बनायेगा। मान लो, तुम्हारी बात सच साबित करने के लिए वह यह कहे कि एक तुम्हारी आँख, दूसरी उसकी, एक तराजू में तोली जाये, तब तुम्हारी क्या हालत होगी? तुम्हारी दूसरी आँख भी चली जायेगी और अन्धे हो जाओगे और उसके पास एक आँख तो रहेगी ही।" स्वामी ने कहा। काना तिलमिलाता चला गया।

फिर मोची ने साधु से अपनी बात कही। "आज एक परदेसी अपनी चप्पल ठीक करवाने मेरे पास आया। उसने कहा कि वह मुझे खुश कर देगा, मैं उसके पास जो कुछ है, उसे ले लूँगा।"

"तुम में थोड़ी-सी भी अक्ल नहीं है। वह व्यापारी तुम्हें ताम्बे का धेला भी न देगा। वह तुम से यह कहेगा—"हमारे सुल्तान के शत्रु मारे गये हैं। उनका मुकाबला करनेवाला दुनियाँ में कोई नहीं है। क्या तुम यह सुनकर सन्तुष्ट हुए? वह पूछेगा। यही कहोगे कि सन्तोष हुआ। अगर न कहोगे, तो सिपाही आकर तुम्हारी बोटी बोटी काट देंगे।" स्वामी ने कहा। मोची कुछ गुन गुनाता चला गया।

फिर जुआखोर ने आकर कहा—"स्वामी! आज एक परदेसी को मैंने जुवे में उतारा। मैंने यह शर्त लगाई कि या तो वह समुद्र का सारा पानी पीये, नहीं तो, जो कुछ उसके पास है, वह दे।"

"वह तुम्हें कानी कौड़ी न देगा। अगर मान लो उसने कहा कि ओक में समुद्र का जितना पानी देगे, उतना पी लूँगा। तब तुम्हारी क्या हालत होगी?" स्वामी ने पूछा।"

व्यापारी ने उनकी बात सुन ली थी, इसलिए अगले दिन वह उनको ठग सका। उसने चन्दन के भार के बराबर जब मक्खियाँ माँगी, उनमें आधी जंगली और आधी मामूली, आधी नर, आधी मादा, तो ठग ने चन्दन के हर गट्ठर के लिए दस दस सोने की मुहरें दीं। और भी उसको उत्तर न दे सके, उससे माफ़ी माँगी, और अपने रास्ते चले गये। जो कुछ पैसा मिलना था, वह लेकर, नगर में घूमकर वह उस बुढ़िया से मिला। उसको बहुत-सा सोना दिया। उसने कसम खाई कि फिर कभी वह उस शहर में न आयेगा। वह बगदाद वापिस चला गया।

मज़दूरी

एक गाँव में भीम नाम का एक लड़का रहा करता था। बचपन में उसके माँ बाप गुज़र गये थे। नानी ने उसको लाड़ प्यार से पाला पोसा। भीम में न अक़्ल थी, न तमीज़ ही। पर उसमें बहुत बल था। सब उसको गोल मटोल भीम कहते। वह कुछ भी पढ़ लिख न सका। यह सोच कि ऐसे लड़के के अवारागिर्दी करने से तो यही अच्छा था कि वह कोई काम काज़ करे उसकी नानी ने उसको कोई काम देखने के लिए कहा और समझाया—

"बिना बात किये काम करो, बिना झगड़ा किये मज़दूरी लो। जो काम दिया जाय, उसे अच्छी तरह करो। जो कुछ लेना है, हाथ भर लो।"

नानी की बातों को याद करता, गोल मटोल भीम काम की खोज में शहर में निकला। रास्ते में एक घर के सामने उसे एक भद्र पुरुष दिखाई दिया। भीम ने उससे कहा—"मैं काम खोज रहा हूँ। मुझे ऐसा आदमी चाहिए जो बिना बात किये काम दे, और बिना झगड़ा किये, मज़दूरी। कोई हो, तो बताइये!"

यह बात तो साफ़ थी कि गोल मटोल भीम निरा मिट्टी का माधो था। उसने उसको एक गिरगिट दिखाई। "वह देखो, बिना बात किये तुम्हें काम के लिए बुला रही है। जो वह करने के लिए कहे, करो, और झगड़ा किये बगैर अपने पैसे वसूल कर लो।"

गोल मटोल भीम ने गिरगिट की ओर देखा। उसने देखा कि बिना कुछ कहे वह गला ऊपर नीचे कर रही थी। यह सोच कि वह सचमुच उसे बुला रही थी

वह उसके पास गया। वह डरकर पास एक छेद में घुस गई।

"यह शायद उसका घर है। वह तो आसानी से अपने घर में चली गई, पर इस घर का द्वार तो बहुत छोटा है, मैं कैसे अन्दर जा सकूँगा!"

उसने उस छेद के पास निशान लगा लिया, खुरपा, फावड़ा लेकर वह उसका छेद बड़ा करने लगा। वह इस प्रकार अन्धेरा होने तक काम करता रहा, बड़ा-सा गढ़ा तैयार कर दिया। उस गढ़े में उसको एक बड़ा-सा पात्र दिखाई दिया। उसने जब उस पात्र में हाथ रखा, तो सोने के सिक्के दिखाई दिये।

"ओहो! शायद मुझे जो काम सौंपा गया था, वह खतम हो गया है।" उसने सोचा। उसकी नानी ने पहिले ही बताया था कि काम अच्छी तरह करके हाथ भर के पैसे लेना। इसलिए उसने हाथ भर सोने के सिक्के लिए। बाकी सोना वहीं छोड़कर घर चला गया।

सोना देखकर नानी हतप्रभ-सी हो गई। "इतना सोना तुम्हें कहाँ मिला!"

गोल मटोल भीम ने जो कुछ गुज़रा था, वह बता दिया। यह सुनकर नानी ने कहा—"अरे पगले! कहाँ है वह जगह मुझे दिखाओ।"

अन्धेरे में भीम उसको उस जगह पर ले गया। नानी ने उससे वह पात्र उठवाया और उसे अपने घर ले गई। "इस धन के बारे में कहीं किसी से न कहना, तुम्हारी शादी पर यह सब खर्चूँगी। तब तक मैं इसे हिफ़ाजत से रखूँगी।"

गोल मटोल भीम ने सिर हिलाया और कहा "अच्छा"।

[अगले मास एक और घटना]

अनायोजित विवाह

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। शव उतार कर कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित वेताल ने कहा—"राजा, यदि इस आधी रात के समय, तुम किसी और के लिए इतने कष्ट उठा रहे हो, तो अवश्य इसका कोई कारण तुम्हारे पूर्व जन्म में रहा होगा। पूर्व जन्म के कारण ही तो सुमहर नाम के मछियारे ने राजकुमारी से प्रेम किया और उस प्रेम के कारण, उसे अपने प्राण खोने पड़े। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी शुरु की।

एक जमाना था, जब राजगृह पर मलयसिंह नाम का राजा राज किया करता था। उस राजा के एक लड़की थी। नाम था मायावती। वह असाधारण सुन्दरी थी।

वेताल कथाएँ

एक दिन जब वह उद्यान में विहार कर रही थी, तो सुग्रहर उसको देखकर उस पर मुग्ध हो गया। सुग्रहर होने को तो सुन्दर और नौजवान था, परन्तु मछली पकड़ कर जीवन निर्वाह किया करता था। यह बिना सोचे कि वह निम्न जाति का था, उसका राजकुमारी के प्रति प्रेम कभी सफल न होगा, वह मायावती के लिए तड़पने लगा। उसे प्रेम का बुखार-सा हो गया। इसके कारण उसने शहर जाना छोड़ दिया। खाना भी न खाता। वह चिन्तातुर हो उठा। माँ ने कुछ दिन देखा। फिर उसने अपने लड़के से सारी बात मालूम कर ली। उसने अपने लड़के से कहा—"अरे बेटा, इतनी-सी बात पर क्यों दुःखी होते हो! खाना खाओ, मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करवादूँगी।" यह सुन सुग्रहर की चिन्ता जाती रही। उसने उठकर खाना खाया। फिर उसकी माँ अच्छी अच्छी मछलियाँ लेकर राजमहल में गई। उसने खबर भिजवाई कि वह राजकुमारी को देखने आई थी। राजकुमारी ने उसको अन्दर आने दिया। मछियारे की माँ मछलियाँ, राजकुमारी को उपहार में देकर चली गई।

उस दिन के बाद, रोज वह मछियारिन राजकुमारी के लिए अच्छी अच्छी मछलियाँ लाकर दे जाती। इस तरह कुछ दिन के बीत जाने के बाद मायावती ने उससे कहा—"तुम्हारे मन में, लगता है, कोई इच्छा है, इसलिए ही रोज मुझे मछलियाँ दे जाती हो। बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है, मैं वह इच्छा पूरी करूँगी।"

"यदि अभयदान दिया, तो मैं अपनी इच्छा धीमे से बताऊँगी।" माँ ने कहा।

मायावती ने अभय दिया। सब के चले जाने के बाद, उसने राजकुमारी से कहा—"मेरे लड़के ने जब से तुम्हें देखा है, वह

तब से तुम्हें प्रेम करने लगा है। तुम्हारे लिए छटपटा रहा है यदि तुम्हें उसे एक बार न छुओगी, तो वह जीवित न रहेगा।"

यह सुन मायावती बड़ी शर्माई। चूँ कि उसने वचन दिया था कि वह उसकी इच्छा पूरी करेगी, इसलिए उसने कहा—"तुम रात को अपने लड़के को महल में ले आना। उसको मैं छू दूँगी।"
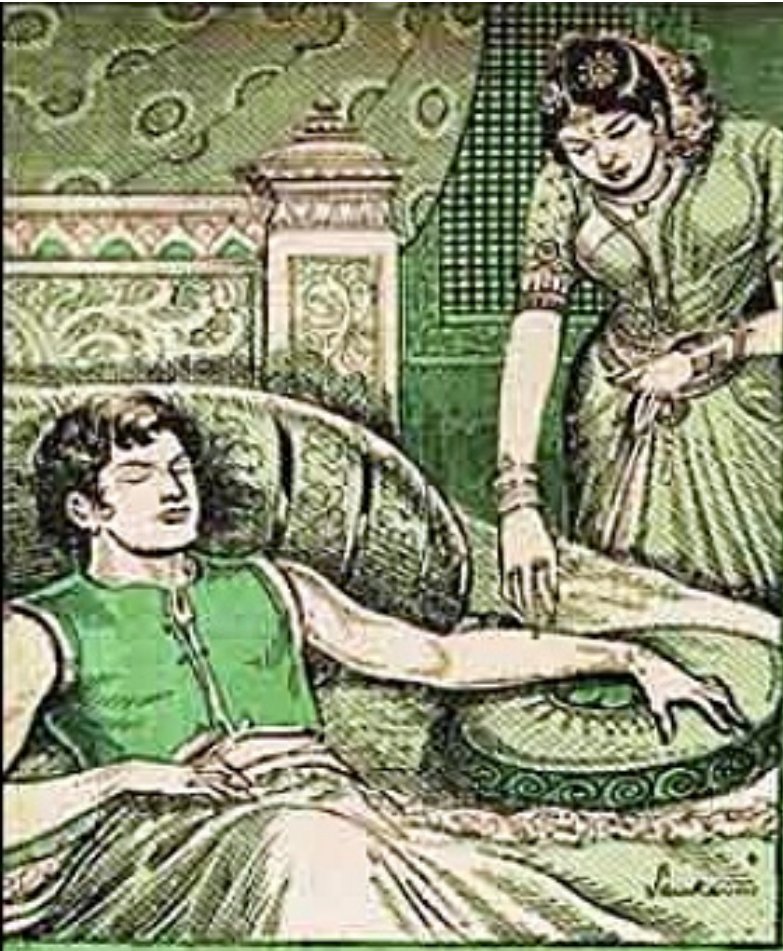
लड़के की माँ बड़ी खुश हुई। वह घर गई। जैसा उससे बन सका, वैसा उसने अपने लड़के को सजाया संवारा और चोरी चोरी उसको मायावती के महल में भी पहुँचा दिया। मायावती ने सुपद्दर को एक बिस्तर पर लिटा दिया और अपने ठंडे हाथ से उसको छुआ। इस स्पर्श के कारण वह आनन्दित हो उठा और उसी आनन्द में वह वहाँ सो गया। जब उसे माळूम हुआ कि वह सो गया था, राजकुमारी मायावती अपने शयनकक्ष में चली गई और निश्चिन्त हो सो गई।

जब मायावती ने उसके शरीर से अपना हाथ हटाया, तो सोता सुपद्दर उठा। उसने चारों ओर देखा। मायावती न दिखाई दी। जिसको उसने प्रेम किया था, वह मिलने को मिल भी गई और चली भी गई, यह देख उसका हृदय फूट पड़ा, और उसी क्षण वह मर गया।

यह पता लगते ही मायावती ने अपने पिता से जो कुछ गुज़रा था कहा। उसने यह भी कहा कि सुपद्दर के साथ वह भी सती हो जायेगी। पिता ने कई तरह उसे समझाया। परन्तु उसने अपना निश्चय न बदला। जब राजा को कुछ न सूझा, तो स्नान कर, आचमन कर उसने अपने आराध्य शंकर का ध्यान किया। "इतनी विकट परिस्थिति कैसे पैदा हुई! इस परिस्थिति में अब मुझे क्या करना है?"

उसके इस प्रश्न के उत्तर में यों आकाशवाणी हुई। "राजा! तुम्हारी लड़की पिछले जन्म में इस मछियारे की पत्नी थी। पुराने जन्म में यह मछियारा, जलधर नामक ब्राह्मण था। उसके पिता के मरते ही उसकी सारी सम्पत्ति सम्बन्धियों ने हड़प ली। इस कारण जलधर को वैराग्य हो गया। वह अपनी पत्नी के साथ गंगा तट पर आया, वहाँ उसने व्रत किया। ब्राह्मण भूख से मरा जा रहा था। जब उसने मछियारे को पास में मछली खाता देखा, तो उसके मुख में पानी आ गया। उसका मन मचल उठा। इस दोष के कारण प्राणों के चले जाने के बाद, उसने मछुओं के कुल में जन्म लिया। उसकी पत्नी पवित्र हृदय से उसके साथ सती हो गई। इस कारण वह इस जन्म में तुम्हारी लड़की हो कर पैदा हुई। यदि इस विपत्ति को टालना है, तो तुम्हारी लड़की को उस मछियारे को अपनी आयु में से आधी आयु देनी होगी, और यदि उससे विवाह करने के लिए मान जायेगी, तो वह जीवित हो उठेगा।"

यह सोच कि कुछ भी हो, लड़की न मरे, राजा ने मायावती से कहा—"बेटी, तुम्हारे

सती होने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि तुम इस युवक से विवाह करने के लिए मानकर उसे अपनी आधी आयु दोगी, तो वह जी उठेगा।" मायावती ने वैसा ही किया। सुभद्र को जिलाकर उसने उसके साथ विवाह किया। सुभद्र उस राज्य का राजा बना और पत्नी के साथ उसने राज्य किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। मायावती ने उस मछियारे को छूकर, उसे सुलाने तक तो अपने बचन का पालन किया। परन्तु जब वह मर गया, तो उसके साथ सती हो जाने का उसने क्यों निश्चय किया! क्या इसलिए कि वह उससे प्रेम करती थी। या इसलिए कि उसकी मृत्यु की वह कारण थी। या इसलिए कि पुराने जन्म में वह उसकी पत्नी थी। अगर तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

तब विक्रमार्क ने कहा—"सुभद्र जब जीवित था, तभी मायावती उसको अपना पति समझने लगी थी, इसमें कोई सन्देह नहीं है। यदि उसने उसको पूर्व जन्म के प्रभाव के कारण पति समझा था, तो उसके कमरे से जाकर, उसकी मृत्यु का कारण होने की कोई आवश्यकता न थी। यदि बचन निभाने भर का प्रयत्न था, तो उसके छूने के बाद, चाहे सुभद्र का कुछ भी हो, मायावती की जिम्मेवारी न थी। जब वह जीवित था, तभी उसने उसको अपना पति समझ लिया था, इसलिए ही उसने सती हो जाने का निश्चय किया था। इसलिए ही वह अपनी आधी आयु देकर, उससे विवाह करने के लिए मान गई थी।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और वृक्ष पर जा बैठा। (कल्पित)

प्रतिज्ञा पूरी हो गई

काश्मीर देश का युवराज शिकार के बाद अपने नौकर चाकरों के साथ नगर वापिस आ रहा था, कि उसको रास्ते में तेलियों की एक लड़की दिखाई दी। वह तिल सुखाकर उनकी रखवाली कर रही थी। युवराज ने उसके पास जाकर पूछा—"तुम तिलों में पैदा हुए, तिलों में बड़ी हुई, तेली की लड़की हो, बताओ तिल के पत्ते से कौन-सा पत्ता छोटा है!"

यह युवराज हमारे कुल का यों अपमान करता है, वह लड़की तैश में आ गई—"फूलों में पैदा होकर, फूलों में बड़े होकर, भूमि का परिपालन करनेवाले राजकुमार, ऐसा फूल तो बताओ, जिसकी बस दो ही पंखुड़ियाँ हों।" उसने युवराज के प्रश्न का उत्तर प्रश्न से दिया। यह देख युवराज गरमाया। "तुम तो कुशाग्र बुद्धिवाली मालूम होती हो। तुम्हें यों नहीं छोड़ना चाहिये। विवाह करके जीवन भर तुम्हें कैद में रखूँगा।"

"युवराज! यदि तुमने मुझ से विवाह किया, तो जेल में रहती मैं एक ऐसे लड़के को जन्म दूँगी, जो तुम्हें पकड़कर, खूब पिटवायेगा।" तेली की लड़की ने प्रतिज्ञा की।

युवराज यों अपमानित होकर घर गया। उसने किसी से बातचीत न की। भोजन नहीं किया। एक कोने में बैठ गया। राजा ने अपने लड़के से पूछा—"शिकार से तो तुम बहुत पहिले आ गये थे, अभी तक क्यों नहीं भोजन किया!"

"मेरे मन में एक इच्छा है। यदि वह पूरी कर दी गई, तो भोजन करूँगा।" युवराज ने कहा। पिता के पूछने पर

युवराज ने कहा कि वह उस तेली की लड़की से विवाह करना चाहता था। राजा ने कहा कि कुलहीन से शादी करना अच्छा न था। लड़के ने कहा कि यदि उससे शादी नहीं की गई, तो वह देश छोड़कर चला जायेगा। इकलौता था, इसलिए पिता ने इस विवाह के लिए अनुमति दे दी।

राजा घोड़े पर सवार होकर स्वयं तेली के घर गया। "तुम्हारी लड़की का मैं अपने लड़के के साथ विवाह करना चाहता हूँ।" उसने इतना कहा ही नहीं, मुहूर्त भी निश्चित कर दिया। उस मुहूर्त में विवाह भी कर दिया गया। इस बीच युवराज ने अपने किले में पत्नी के लिए एक छोटा-सा महल बनवाया। उसमें उसे रखा। दरवाज़ों पर ताले लगाकर, उसको जेल-सा बना दिया। जो कुछ उसे चाहिये होता, युवराज स्वयं भेजता। उसकी सेवा-शुश्रुपा करने के लिए एक दासी थी।

युवराजा की पत्नी ने अपने पिता की सहायता से अपने मायके के घर से जेल तक बिना किसी को मालूम हुए एक सुरंग बनवाई। वह दासी से यह कहकर कि जब मैं बुलाऊँ, तभी आना, रोज़ अपने घर सुरंग से हो आती।

उसके लिए उसके पिता एक मान्त्रिक और एक नट को ढूँढकर लाया। वह उनका अपने घर ही पोषण कर रहा था। युवराज की पत्नी ने तीन साल मेहनत करके मन्त्र विद्या और नटी का काम सीखा।

फिर उसने नट से कहा—"आपने मुझे हुनर सिखाया। यदि इससे आपको लाभ होना है, तो राजा के सामने अपना हुनर दिखाना होगा। हमारा हुनर देखकर वे हमें बहुत-सा ईनाम देंगे।"

अगले दिन नट युवराज की पत्नी को नटी का वेष पहिनाकर, राजमहल में गया। उन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन किया। युवराज भी अपने मित्रों के साथ यह प्रदर्शन देख रहा था। उसकी पत्नी ने पहिले कुछ गाने गाये, फिर नृत्य किया। फिर वह बाँस पर चढ़कर खतरनाक कलेबाजियाँ लगाने लगी। युवराज ने जब उसको देखा, तो उसके लिए उसमें प्रेम उमड़ आया। कहीं वह बाँस पर गिर गिरा न जाये, युवराज ने उसको नीचे उतरने की आज्ञा दी।

फिर उसने नट को बुलाकर कहा—"हम तुम्हारी लड़की से एक रात बिताना चाहते हैं। उसे हमारे उद्यान में भेजना। नट मान गया। उसने युवराज की पत्नी को, अपने पति के पास भेज दिया। वह रात भर अपने पति के साथ रही। सवेरा होते ही, वह मायके गई, वहाँ भोजन करके, वह अपने कैद में आ गई।"

जाते समय युवराज ने उसको ईनाम में अपनी अंगूठी और कुछ आभूषण दिये। युवराज की पत्नी गर्भिणी हुई। सकाल में उसने लड़के को जन्म दिया। वह नाना के घर ही बड़ा हुआ। सब विद्यायें सीखीं। युवराज की पत्नी ने अपनी प्रतिज्ञा आधी पूरी कर ली थी। उसने अपने पति से एक लड़के को जन्म दिया था। अब उससे अपने पिता को पिटवाना रह गया था। इसलिए एक दिन उसने अपने लड़के को इस बारे में बताया और उससे कहा कि वह आधी प्रतिज्ञा भी पूरी कर दे।

लड़का इसके लिए मान गया। वह तुरत जंगल में रहनेवाली नानी के घर गया। उसने उससे कहा—"नानी, मेरा कोई नहीं है। तुम्हें ही मेरी मदद करनी होगी।"

"तुम ज़रा मेरे पशुओं को देखते रहो, मैं तुम्हें मांड बनाकर देती हूँ।" नानी ने कहा।

लड़का, नानी के यहाँ रहता रहा। एक रात मन्त्र शक्ति के कारण वह राजमहल में घुस गया। वह अपने पिता, युवराजा के कमरे में गया। युवराज के मुँह पर उसने नशे की दवा छिड़की। उसने उसके पलंग के पाये निकाल दिये। उनके बदले उसने केले के ठूंठ लगा दिये। उसके आभूषण ले लिये। उन्हें नदी के किनारे रेत में छुपा दिये। सवेरा होने से पहिले वह नानी के घर जाकर सो गया। फिर वह इस तरह पशु चराने निकल गया, जैसे कुछ जानता ही न हो।

सवेरे मालूम हो गया कि युवराज के कमरे में कोई चोर आया था। राजा ने मन्त्री को बुलवाया। मन्त्री ने कोतवाल को चोर पकड़कर लाने के लिए कहा। उस दिन रात को मन्त्री के घर चोरी हुई। मन्त्री की पत्नी के सब गहने चोरी चले गये। राजा ने कोतवाल को बुलाकर कहा कि यदि तुमने दो दिन में चोर को न पकड़ा, तो तुम्हें सजा दी जायेगी। वह शहर छानने लगा।
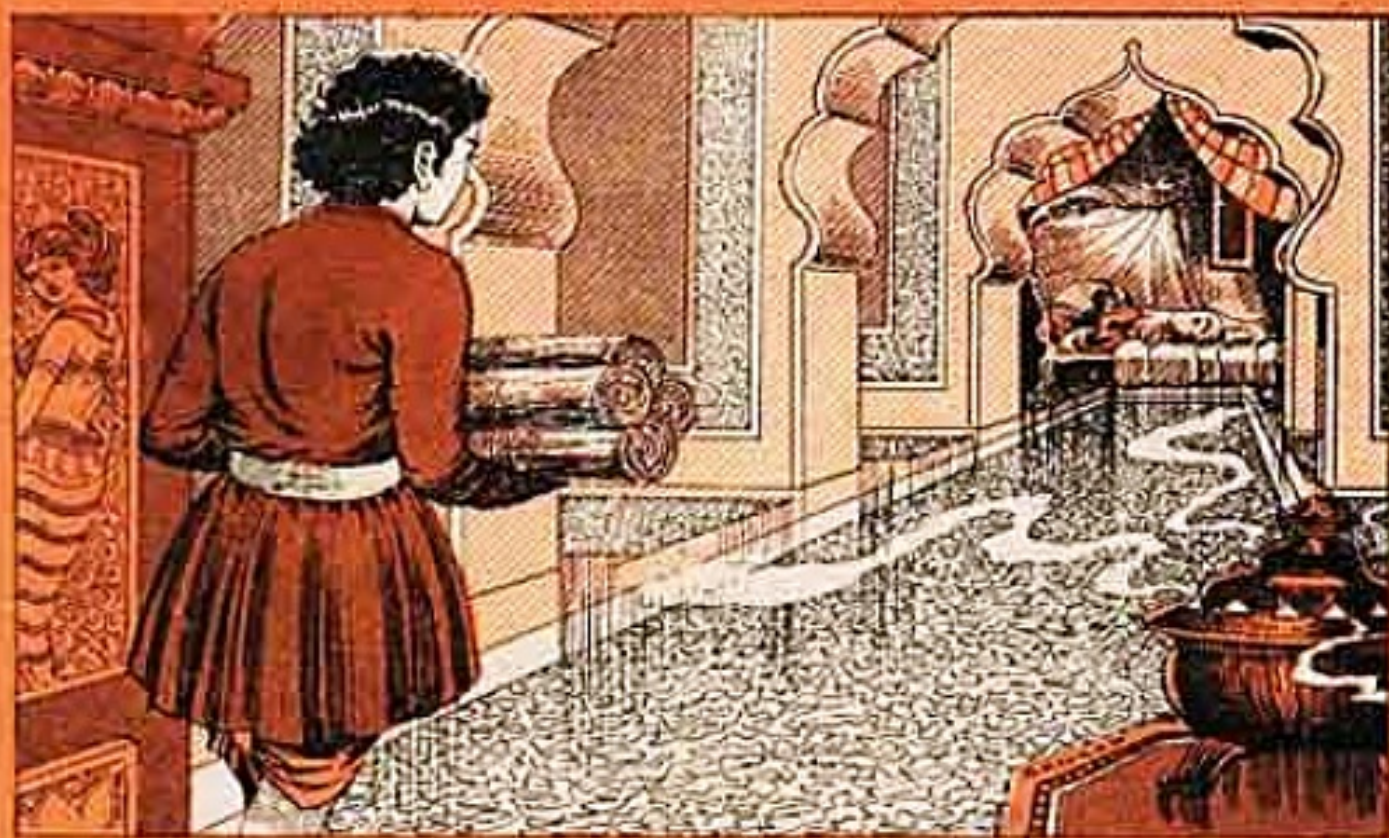
उस कोतवाल की एक लड़की थी। उसका पति बहुत पहिले किसी और देश चला गया था। वापिस न आया था। लड़के ने कोतवाल के दामाद के बारे में पूछ ताछ करके सब कुछ मालूम कर लिया। वह कोतवाल और उसकी पत्नी के लिए कपड़े आदि लेकर, वेश बदलकर कोतवाल के घर के बगलवाले घर में जाकर उसने पूछा—"क्या बता सकेंगे, मेरे ससुर का घर कहाँ है?" उन्होंने दो चार प्रश्न किये। फिर यह अनुमान करके कि कोतवाल का दामाद वापिस आया था उसे वे कोतवाल के घर ले गये। उन्होंने उसका हर तरह से स्वागत सत्कार किया।

जब उस दिन कोतवाल, चोर पकड़ने के लिए निकला, तो लड़के ने पूछा—"कहाँ जा रहे हैं!" कोतवाल ने कहा कि चोर पकड़ने जा रहा हूँ। लड़के ने कहा कि वह भी उसके साथ जायेगा। वह भी उसके साथ चल दिया।

वे राज पथ से जा रहे थे तो एक चौराहे पर टिकटिकी दिखाई दी। "यह क्या है?" लड़के ने कोतवाल से पूछा।

दिया और कील उतार दी। "अब यह कील फंस गई है। निकल नहीं रही है। बताइये क्या किया जाय!"

"घर जाओ। अपनी सास से कहकर कोई बसूला लाओ।" कोतवाल ने कहा।

लड़का कोतवाल के घर गया। "सास" से कहा—"राज-सैनिक ससुर को पकड़कर ले गये हैं, उनको चोर बताकर टिकटिकी पर लटका दिया गया है। घर में जो सोना चान्दी है, उसे हिफ़ाज़त से रखो।"

"छुपाने के लिए भला मेरे पास जगह भी कहाँ है! तुम नये हो, इसलिए सब कुछ तुम अपने पास ही रखो।" कोतवाल की पत्नी ने घर में जो कुछ कीमती चीज़ें थीं यानि सोना चान्दी वगैरह लड़के को दे दीं। वह उन्हें लेकर नदी के किनारे गया। रेत में उन्हें छुपाकर नानी के घर चला गया और सो गया।

सवेरा होने पर सैनिकों ने आकर कोतवाल को टिकटिकी से छुड़ाया—"क्या हुआ!" उन्होंने उससे पूछा।

"वही चोर था। मैंने सोचा कि वह दामाद था—कहते भी शर्म आती है।" कोतवाल ने कहा।

"यह टिकटिकी है। चोर को पकड़कर जब उस पर लटका दिया जायेगा और कील उतार दी जायेगी, तो वह कहीं भाग न सकेगा।" कोतवाल ने कहा।

"देखें, तो मेरे हाथ और पैर उसमें तो रखो।" लड़के ने कहा।

कोतवाल ने सोचा, जो दामाद कई साल बाद भटक-भटका कर घर आया था, उसको टिकटिकी पर चढ़ाना ठीक न था। "अरे तुम क्यों, मैं ही हाथ पैर इनमें रखता हूँ। तुम कील उतारो।" लड़के ने कोतवाल को इस तरह टिकटिकी पर चढ़ा

यह सुन राजा को आश्चर्य हुआ। मन्त्री ने कहा—"महाराज! आज मैं स्वयं चोर को पकड़ूँगा। यह काम कोतवाल से नहीं होगा।"

उस दिन रात को लड़के ने धोबी का वेष धरा। वह कपड़ों का गट्ठर लेकर नदी के धोबी घाट पर गया और वहाँ उन्हें धोने लगा। मन्त्री सिपाहियों के साथ वहाँ आया। "अरे, इस समय क्या धो रहे हो?" उन्होंने पूछा।

"क्या कहूँ साहब, थोड़ी देर में चोर आकर कपड़े ले जायेंगे। उन्हीं के कपड़े धो रहा हूँ।" लड़के ने कहा।

"क्या उन चोरों को हमारे हाथ पकड़वाओगे। मैं तुम्हें सौ मुहरें दूँगा।" मन्त्री ने कहा।

"चोरों को यदि पकड़ना चाहते हैं, तो जैसे मैं कहूँ, वैसे कीजिये। यदि आप और आपके सिपाही यहाँ रहे, तो चोर नहीं आयेंगे। आप इन सिपाहियों को भिजवा दीजिये। आप इस बड़े हँडे में छुप जाइये। जब मैं आवाज़ दूँ तो बाहर निकल कर चोरों को पकड़ लीजिये।" लड़के ने कहा।

मन्त्री ने सोचा कि अब चोर छुटकर न जा सकेंगे। उसने अपने सिपाहियों को दूर भेज दिया। आभूषण उतारकर वह हँडे में जा बैठा। तुरत लड़के ने उस हँडे पर एक बड़ा-सा पत्थर रख दिया। मन्त्री के आभूषण रेत में रखकर नानी के घर चला गया। मन्त्री के सिपाहियों ने सवेरे तक इन्तज़ार की। जब घाट पर गये, तो उन्हें मन्त्री का चिल्लाना सुनाई दिया। उन्होंने उसको हँडे से निकाला। मन्त्री ने उनसे कहा—"अरे, यह किसी से न कहना।"

लड़के को मालूम हुआ कि अगले दिन युवराज स्वयं चोर को पकड़ने के लिए निकल रहे थे। "आज मैं अपनी माता की प्रतिज्ञा पूरी करूँगा।" सोचकर, उसने उस दिन रात को बनिये का वेष धरा। नदी के पास, नगर से बाहर एक छप्पर डाला, उसमें बेचने के लिए जो चीज़ें रखनी थीं, वे रखीं। दुकान बनाई। वहाँ उसने कुछ रस्सियाँ और बोरे भी रखे। दीया जलाकर दुकान में बैठ गया।

युवराज सैनिकों को लेकर रात भर शहर में गश्त लगाता रहा। रात के समय दुकान में आया। युवराज को देखते ही बनिये के वेष में लड़का भय भक्ति का अभिनय करता सामने गया। उसने युवराज के सामने हाथ जोड़े।

"इस आधी रात के समय किसके लिए यह दुकान खोले हुए हो?" युवराज ने लड़के से पूछा।

"महाराज, चोर अपना काम करके इस तरफ़ से लौटेंगे। उनकी इन्तज़ार कर रहा हूँ।" लड़के ने कहा।

युवराज ने उसकी बात सुनकर सन्तुष्ट होकर पूछा—"क्या इन चोरों को हमें सौंप दोगे?"

"अगर आप चोर पकड़ना चाहते हैं, तो जो मैं कहूँ वह कीजिये। आप अपने सैनिकों को नगर के द्वार पर खड़े रहने के लिए कहिये। आप एक बोरे में छुप जाइये। चोरों के आने पर, मैं उनसे कहूँगा, यह रहा तुम्हारा बोरा, आपका बोरा दे दूँगा। तब वे बोरा खोलेंगे। आप बाहर आकर आवाज दीजिये, आपके सैनिक तब आकर चोरों को पकड़ सकते हैं।" लड़के ने कहा।

युवराज ने अपने सैनिकों को दूर भेज दिया, युवराज अपनी तलवार, पोषाक, पगड़ी उतारकर, बनिये को देकर, स्वयं बोरे में घुस गया। फिर लड़के ने बोरे के मुख पर रस्सी बाँध दी। उसने अपना वेश उतार दिया। युवराज के कपड़े पहिन लिये। सैनिकों को उसने आवाज़ दी।

सैनिकों ने आकर जब लड़के को देखा, तो उसे युवराज ही समझा। लड़के ने उनसे कहा—"चोरों का सरदार मिल गया है। उसको मैंने इस बोरे में बन्द कर दिया है। चलो इसे राजमहल ले चलें।"

सैनिकों ने मिलकर उस बोरे को लातें मारीं, फिर उसे लेकर राजमहल की ओर

गये। बोरे में युवराज चिल्लाता रहा, पर किसी ने उसकी सुनी नहीं।

राजा यह देख बड़ा खुश हुआ कि उसका लड़का चोर पकड़कर ला रहा था। पर जब लड़का बोरा लेकर पहुँचा, तो राजा ने पूछा—"चोर कहाँ है? मेरा लड़का कहाँ है?"

"महाराज, मैं चोर हूँ। युवराज इस बोरे में हैं। वे मुझे नहीं पकड़ सके, मैंने ही उन्हें पकड़ लिया।" लड़के ने कहा। जब खोला गया, तो उसमें से युवराज बाहर निकले। युवराज की पोषाक पहिने उस लड़के को राजा ने देखा, तो वह आगबबूला हो उठा। उसने सैनिकों से कहा—"इसको ले जाकर मार दो।"

"महाराज, जल्दबाजी मत कीजिये। सजा देने से पहिले सुनवाई करना उचित है। मैं पराया नहीं हूँ। आपका पोता ही हूँ। आपके लड़के ने जिस तेली की से शादी की थी, जिसको उन्होंने कैद में रख रखा है, मैं उसी का लड़का हूँ। उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए मैं अपने पिता को इस तरह बाँधकर लाया हूँ। मेरी माँ और उनके माँ बाप को बुलवाइये, आप स्वयं सच जान जायेंगे।" लड़के ने कहा।

युवराज की पत्नी और उसके माँ बाप आये। जो कुछ गुज़रा था, वह सब साफ़ हो गया। युवराज के दिये हुए अंगूठी और आभूषण दिखाये गये। उसके महल और उसके मायके घर के बीच जो सुरंग थी, उसे देखकर सबको सच पता लग गया।

राजा अपने पोते की सूझबूझ और बहू की लगन देखकर बड़ा खुश हुआ। युवराज अपनी हार मान गया। वह अपनी पत्नी और लड़के के साथ सुख से रहने लगा।

विश्वामित्र और उनके पीछे पीछे राम और लक्ष्मण एक कोस चलकर सरयू नदी के दक्षिण तट पर पहुँचे।

"राम, तुम तुरत आचमन करके आओ, मैं तुम्हें बल और अतिबल नाम की दो शक्तियाँ दूँगा। ये मन्त्र युक्त बल तुम्हें थकने न देंगे, न तुम्हें बीमार ही होने देंगे। तुम्हारा रूप न बिगड़ने देंगे। आपत्तियों से तुम्हारी रक्षा करेंगे। जब तक तुम यह मन्त्र जपते रहोगे तब तक तुमसे अधिक सुन्दर, बुद्धिमान, चतुर कोई न हो सकेगा। न भूख, प्यास लगेगी। न तुमसे बढ़कर कोई अधिक युक्ति कर सकेगा। तुम बड़े यशस्वी बनोगे।" विश्वामित्र ने कहा।

राम ने खुशी खुशी आचमन किया। परिशुद्ध होकर उन्होंने विश्वामित्र से बल और अति बल ग्रहण किया। उस दिन उन्होंने सरयू नदी के तट पर विश्राम किया।

प्रातःकाल होते ही विश्वामित्र ने उनको उठाया और सरयू नदी में उनसे स्नान करवाया। नित्यकृत्य से निवृत्त होकर विश्वामित्र के साथ वे निकल पड़े। वे चलते चलते उस जगह पहुँचे जहाँ सरयू और गंगा का प्रयाग है।

वहाँ एक आश्रम था। वहाँ कभी जब शिव तपस्या कर रहे थे, मन्मथ उनकी तपस्या भंग करने आया। और जब

शिव ने अपना तृतीय नेत्र खोला तो वह भस्म हो गया। तब से उस आश्रम में शिव के मुनि शिष्य रहा करते थे। क्योंकि मन्मथ अपना अंग (शरीर) वहाँ खो बैठा था, इसलिए उस प्रान्त का नाम अंगदेश पड़ा।

राम लक्ष्मण को ये बातें विश्वामित्र से मालूम हुईं। उन्होंने वह रात आश्रम में काटी।

अगले दिन उन्होंने नौका में गंगा पार की। फिर उन्होंने एक भयंकर वन में प्रवेश किया। कहीं जनसंचार न था। निरन्तर कोलाहल, सिंहगर्जन, जंगली सूअरों का गुरगुराना, हाथियों का चीत्कार सुनाई पड़ रहा था। पेड़ पौधे इतने ऊँचे और घने थे कि आदमी उस वन में न घुस सकते थे।

राम उस वन को देखकर चकित हुए। उन्होंने विश्वामित्र से पूछा—"महामुनि! इस वन का नाम क्या है? विश्वामित्र ने उस वन की कहानी विस्तार पूर्वक राम लक्ष्मण को सुनाई।

उस प्रान्त में कभी मलदभू और करूशभू नाम के दो देश थे। वे धन-धान्य से परिपूरित थे। ताटका नाम की यक्षिणी और उसका लड़का मारीच दोनों देशों को नष्ट कर रहे हैं। उनसे डरकर लोग इस तरफ़ आ ही नहीं रहे हैं। ताटका मामूली नहीं है। उसमें हज़ार हाथियों का बल है। इसलिए ये दो हरे-भरे प्रान्त अब भयंकर वन हो गये हैं। जन रहित हो गये हैं।

यह सुन राम ने कहा—"स्वामी, कहा जाता है कि यक्ष अल्प शक्तिवाले होते हैं। फिर इस ताटका में हज़ार हाथियों का बल कैसे आगया....? कैसे वह इतनी भयंकर हो गई?"

"ताटका का वृत्तान्त भी सुनाता हूँ। सुनो। सुकेतु नाम का एक बड़ा यक्ष रहा करता था। उसने पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या की। ब्रह्मा उसकी तपस्या से सन्तुष्ट हुए। उन्होंने लड़का तो प्रदान नहीं किया। परन्तु उसको हज़ार हाथियों की बलवाली लड़की वर में दी। ब्रह्मा के वर के प्रभाव से सुकेतु के ताटका पैदा हुई और बढ़ी होने लगी। जब वह सयानी हुई, तो वह बड़ी सुन्दर भी हुई। तब सुकेतु ने उसका सुन्द नामक यक्षकुमार से विवाह किया। उनके मारीच नाम का लड़का पैदा हुआ। वह पराक्रम में इन्द्र के समान था। वह बड़ा घमंडी था। फिर एक और बात हुई। उसी प्रान्त में अगस्त्य मुनि तपस्या कर रहे थे। उन्होंने सुन्द को मार दिया।"

विश्वामित्र कहते जा रहे थे, इस पर ताटका और मारीच अगस्त्य पर क्रुद्ध होकर चिल्लाते उनको खाने के लिए आये। तब अगस्त्य ने शाप दिया कि वे दोनों राक्षस हो जायें। मारीच राक्षस हो गया। ताटका अपना सारा सौन्दर्य खो बैठी। वह भयंकर हो गई। नर-भक्षिणी भी बन गई।

ताटका अगस्त्य का तो कुछ न बिगाड़ सकी। परन्तु उस पुण्य भूमि को, जहाँ वे रहा करते थे, उजाड़ रही है। इसलिए राम तुम उसका नाश कर दो। वह स्त्री है, इसलिए संकोच मत करो। इसकी दुष्टता की कोई सीमा नहीं है। उसको मारने से तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा।" विश्वामित्र ने कहा।

राम ने हाथ जोड़कर कहा—"महामुनि! हमारे पिता ने हमें यह आदेश दिया है कि जो कुछ आपकी आज्ञा हो हम उसका पालन करें। आपकी आज्ञानुसार मैं ताटका

को मार दूँगा।" कहते कहते उन्होंने अपना धनुष ठीक किया और उसकी प्रत्यंचा बजाई।

प्रत्यंचा की ध्वनि सुनते ही ताटका और वन में रहनेवाले सब चेते। उसकी ध्वनि सुन ताटका झुंझलाई और उस तरफ़ भागी जहाँ से ध्वनि आई थी।

इस तरह आते हुए ताटका को देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा—"लक्ष्मण, देखा यह इतनी कुरूपी है कि वीर धीर भी भयभीत हो सकते हैं। इस स्त्री को मारने के लिए मेरे हाथ नहीं उठ रहे हैं। उसको जरा पास आने दो। उसके कान नाक काटकर उसका अभिमान कम कर देंगे।"

ताटका ये बातें सुनकर गुस्से में हाथ उठाकर राम और लक्ष्मण की तरफ़ दौड़ी। धूळ से उनको ढ़क-सा दिया और उनपर वह पत्थर बरसाने लगी। राम ने उसके दोनों हाथ बाण से काट दिये। लक्ष्मण ने क्रुद्ध हो उसके नाक और कान काट दिये। पर मायावी ताटका फिर भी उनपर पत्थर फेंकती जाती थी।

तब विश्वामित्र ने पूछा—"क्यों इस पापी पर दया कर रहे हो! यदि यह

जीवित रहेगी, तो जाने क्या यह करे। संध्याकाल से पहिले इसको मार दो। प्रातःकाल और सायंकाल में राक्षसों का बल अधिक होता है। उस समय उनको जीतना कठिन है।"

यह सुन राम ने ताटका की छाती में एक बाण मारा। उस बाण की चोट से वह भूमि पर गिरी और थोड़ी देर में छटपटाकर मर गई।

विश्वामित्र ने आनन्दित हो राम को पास बुलाया। उनके सिर को सूंघा। कहा—"तुमने इस दुष्टा को मारकर हमारा बड़ा उपकार किया। आज रात हम यहीं रहेंगे। सवेरा होने के बाद हम अपने आश्रम जायेंगे।"

अगले दिन उषाकाल में उन्होंने राम को उठाया, वे स्वयं शुद्ध हुए। पूर्व की ओर मुँह करके, राम को कई अस्त्रों के बारे में उपदेश दिया। मन्त्र पठन किया। उसी समय वे अस्त्र, राम के समक्ष मूर्तरूप हो खड़े हो गये। हाथ जोड़कर उन्होंने कहा—"हम तुम्हारे भृत्य हैं। जो आप कहेंगे हम वह करेंगे।" राम ने उन अस्त्रों को छूकर कहा—"अभी तुम सब मेरे मन में रहो।"

जीतकर, स्वर्ग पर आक्रमण किया, तो महाविष्णु कश्यप के रूप में वामन बनकर पैदा हुए। वह बलि के यज्ञस्थल पर गये। उससे तीन हाथ भूमि माँगी। बलि ने दे दी। वामन ने तीन लोको को तीन हाथ में ले लिया और बलि को अधोलोक में भेज दिया। वह वामन और उनका पिता कश्यप इस आश्रम में दीर्घ काल तक तपस्या करते रहे। इसलिए मैंने भी अपना आश्रम यहाँ बनाया, राक्षस बार बार आकर मुझे बहुत तंग कर रहे हैं। उन सबको तुम्हें मारना होगा।

फिर राम ने विश्वामित्र से अस्त्रों का उपसंहार करने का मन्त्र भी सीखा, फिर वे तीनों आगे चले।

उनके कुछ दूर जाने के बाद, एक पहाड़ के पास एक सुन्दर वन दिखाई दिया, राम ने वह देखकर कहा—"इस वन को देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। ऐसा लगता है, जैसे यहाँ कभी कोई आश्रम रहा होगा। इसकी क्या कहानी है?" तब विश्वामित्र ने यह कहानी सुनाई।

"विरोज का लड़का बलि महा पराक्रमशाली था। जब उसने तीनों लोक

विश्वामित्र जिस आश्रम के बारे में कह रहे थे, उसका नाम सिद्धाश्रम था। राम लक्ष्मण के साथ, विश्वामित्र मुनि के आश्रम में प्रवेश करते ही, वहाँ के मुनि सन्तुष्ट हो भागे भागे आये। विश्वामित्र की पूजा की, राम लक्ष्मण का सत्कार किया।

राम लक्ष्मण ने कुछ देर विश्राम किया। यात्रा की थकान मिटाई। फिर उन्होंने विश्वामित्र के पास आकर कहा—"महामुनि, अब आप यज्ञ प्रारम्भ करने

SANKAR
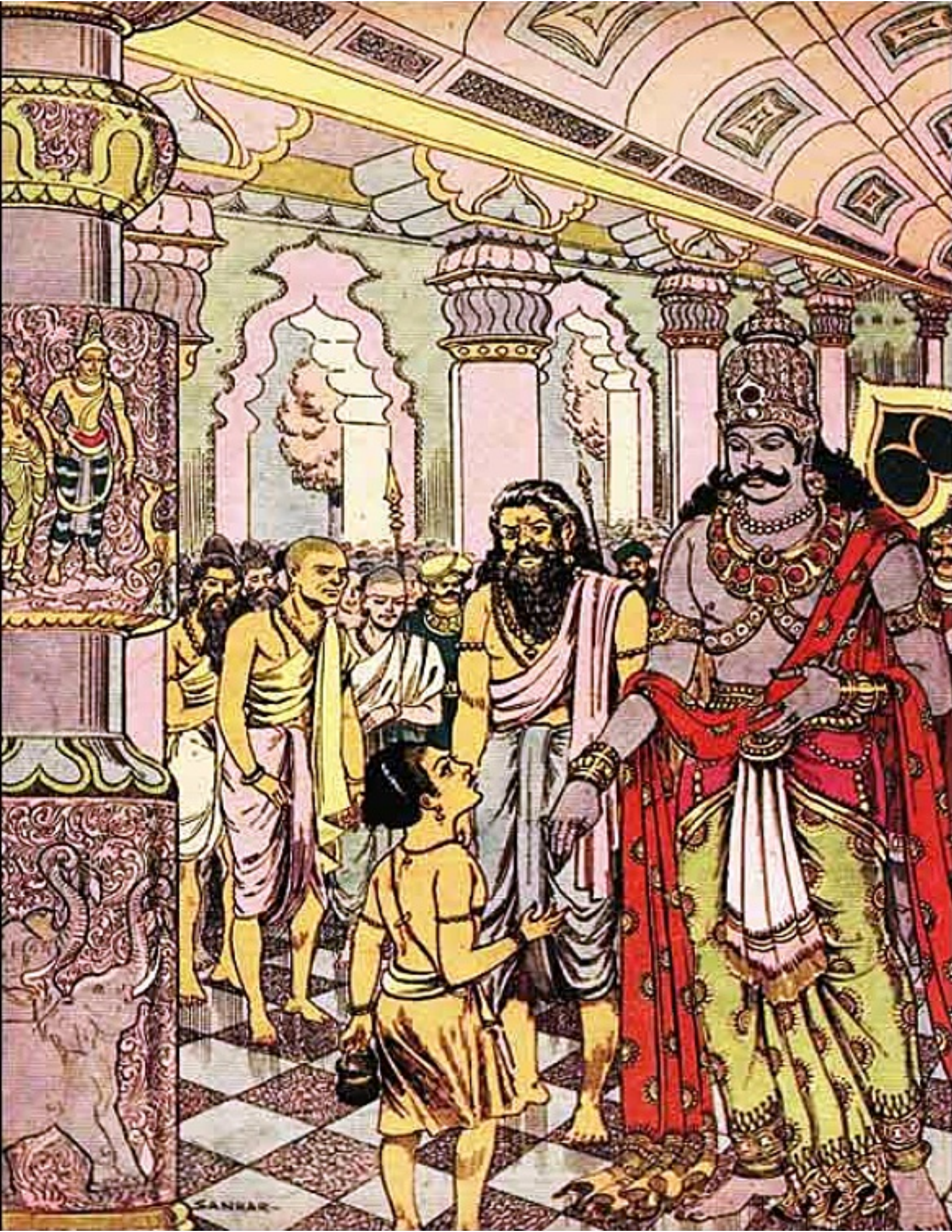
का उपक्रम कीजिये। हम आपके यज्ञ की रक्षा करेंगे।"

एक रात बीत गई। राम लक्ष्मण उठे। सन्ध्यावन्दन समाप्त करके, जब विश्वामित्र के यहाँ पहुँचे, तो वे हवन कर रहे थे। उन्होंने विश्वामित्र को नमस्कार करके पूछा—"महात्मा! राक्षस कब आयेंगे! हम उनकी प्रतीक्षा कब करें!"

विश्वामित्र ने जवाब न दिया। परन्तु यज्ञ वेदिका के चारों ओर बैठे मुनियों ने राम लक्ष्मण से कहा—"विश्वामित्र समाधिस्थ हैं, इसलिए वे मौन हैं। आज से छः दिन तक आपको हमारी रक्षा करनी होगी।"

राम लक्ष्मण ने बड़े बड़े बाण लेकर रात को बिना सोये, दिन रात पाँच दिन तक आश्रम की रक्षा की, छठा दिन आया।

यज्ञशाला में अग्नि जल रही थी। विधिपूर्वक यज्ञ चल रहा था। उस समय आकाश में गर्जन सुनाई दिया। सुबाहु, मारीच और उनके वर्ग के और राक्षस, काले मेघों की तरह आकाश में छा गये और यज्ञ वेदिका पर रक्त वर्षा करने लगे।

राम राक्षसों का गर्जन सुन भागे भागे आये। सिर उठाकर आकाश की ओर देखा, तो ऊपर राक्षसों का झुन्ड था। उन्होंने मानवास्त्र मारीच पर छोड़ा। उसकी चोट के कारण मारीच समुद्र में जा गिरा। फिर राम ने आग्नेयास्त्र से सुबाहु को वायव्यास्त्र से शेष राक्षसों को मार दिया। विश्वामित्र का यज्ञ समाप्त हुआ। उसने राम से कहा—"तुमने हमारा बड़ा उपकार किया।" उसने उनकी प्रशंसा की।

मन्डू अवशेष

इन्दौर से ६२ मील दूरी पर, एक ऊँचे पठार पर एक पुरातन दुर्ग है।

११ वीं शताब्दी में जब मालवा देश में परमार वंश के स्वतन्त्र राजाओं का राज्य था, तब इस दुर्ग का विशेष महत्व रहा।

१३०४-१४०१ में मालवा भी मुस्लिम राज्य में शामिल कर लिया गया। इसके बाद, १२५ वर्ष तक गोरी खिलजी राजा मालवा पर स्वतन्त्र रूप से शासन करते रहे। उन लोगों की राजधानी मन्डू ही थी।

मन्डू का अर्थ "आनन्दनगर" है। वर्षा काल में जो सुख और सौन्दर्य यहाँ है, बादशाह जहाँगीर ने अपने अनुभवों में लिखा है, अन्यत्र दुर्लभ है।

ऊपर लिखित १२५ वर्षों में कहना चाहिए, मन्डू वस्तुत: "आनन्दनगर" ही था।

यहाँ एक सात मंजिलों की विजयस्तूप, संगमरमर का बना अशर्फी महल, जामा मस्जिद, होशन्गशाह समाधि, अतुलनीय जहाज़ महल, हिन्डोला महल आदि हैं। और भी कितने ही दर्शनीय स्थल हैं। समीप ही, पहाड़ पर रूपमती मण्डप है।

यह रूपमती एक गायिका थी। मन्डू के स्वतन्त्र राजाओं में अन्तिम बाज बहादुर इसका प्रेमी था। उनके प्रेम के बारे में अब भी कई गीत प्रचलित हैं। १५६१ में अकबर ने मन्डू को जीत लिया। बाज बहादुर जब हार गया, तो रूपमती यह अपमान न सह सकी। उसने आत्महत्या कर ली।
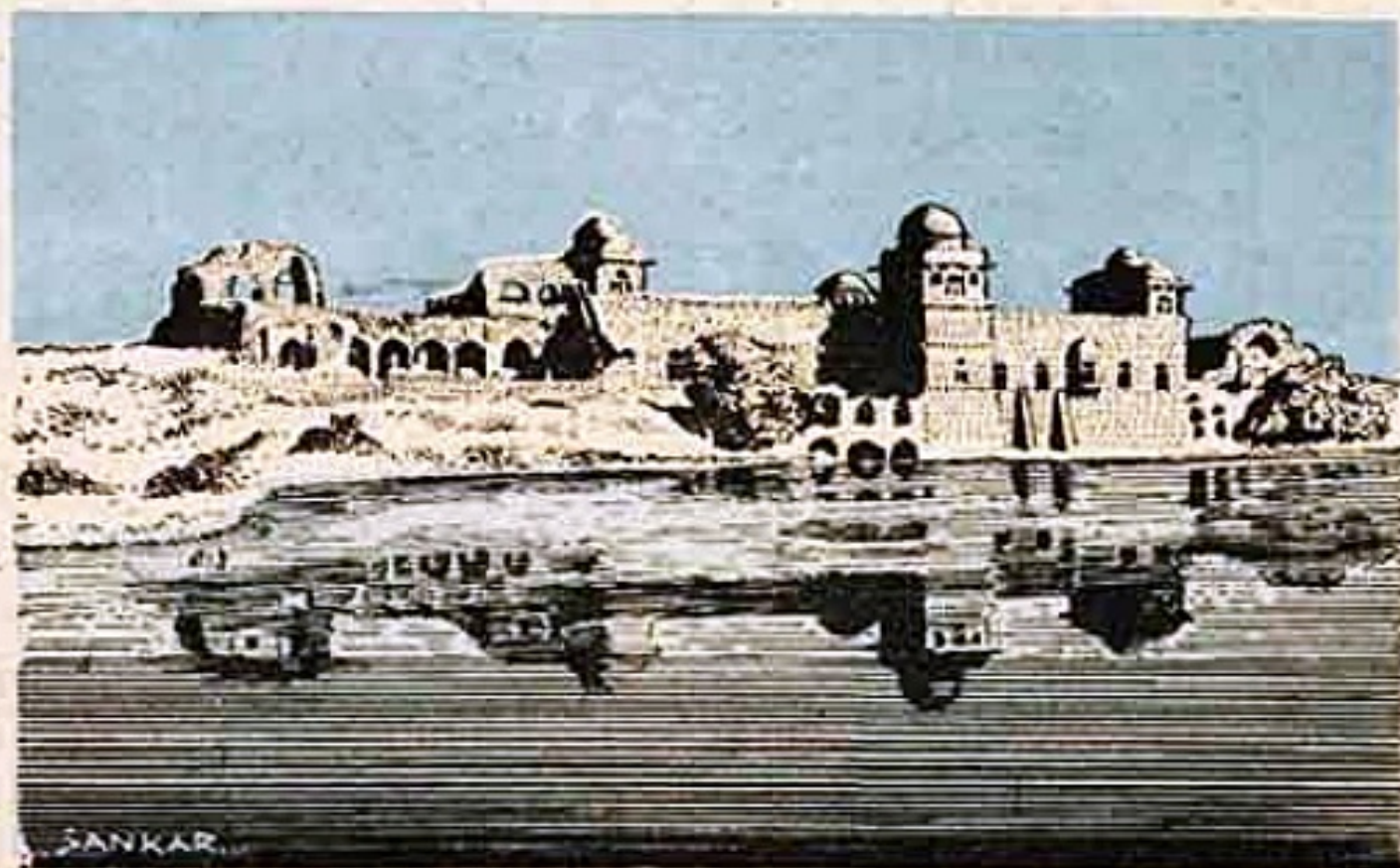
१. किशोर चाई वाण

"चन्दामामा" के निकलने की ठीक तारीख क्या है ?

हर महिने १५ तारीख तक प्रकाशित होता है ।

२. अशोक कुमार, शाहदोल

क्या प्रश्नोत्तर शीर्षक में प्रश्न भेजने के लिए आर्थिक शुल्क की आवश्यकता है ?

नहीं तो, बिल्कुल नहीं ।

३. गोविन्द प्रसाद व्यास, इन्छावर

"चन्दामामा" कितने वर्षो से बच्चों का मनोरंजन कर रहा है ?

पीछले बारह वर्षों से ।

४. गिरीशचन्द्र गुप्ता, अलीगढ़

क्या रामायण के सब काण्ड प्रकाशित होंगे, या सिर्फ़ बालकाण्ड ही ?

पूरी रामायण प्रकाशित करने का इरादा है ।

५. अनिल कुमार गर्ग, टून्डला

यदि कोई किसी निश्चित अवधि तक ग्राहक हो तो क्या वह अवधि समाप्त होने के पूर्व उसे उसकी सूचना दी जाती है ?

हाँ, सूचना दी जाती है ।

६. एम. सी. जैन, "आज़ाद", दमोह

क्या आप पत्र मित्र स्तम्भ नहीं निकाल सकते, जिससे हम पाठक आपस में पत्र व्यवहार कर सकें?

चन्दामामा के पृष्ठों में यदि वृद्धि हुई, तो हम अवश्य इस सुझाव पर सोचेंगे।

७. सत्यपाल, जगदलपुर

आज तक चन्दामामा में कितने धारावाहिक कथाओं की रचना हुई है, और क्या वह अलग अलग पुस्तक के रूप में प्राप्त हो सकते हैं?

अब तक लम्बे लम्बे १५ धारावाहिक प्रकाशित हुए हैं। उन में से "विचित्र जुड़वा" पुस्तक रूप में प्राप्त है।

८. महेन्द्रकुमार मित्तल, जमशेदपुर

"चन्दामामा" में क्या कोई भी अपनी रचना भेज सकता है? या चन्दामामा का सदस्य बनना पड़ता है?

सदस्य बनने की ज़रूरत नहीं, पर सामग्री हमारे पास इतनी पड़ी है कि हम अब आनेवाली सामग्री पर विशेष ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। हाँ, अगर चीज़ अच्छी हुई, तो उसको स्थान मिलेगा ही।

९. विनोद कुमार मिश्र, जमशेदपुर

"चन्दामामा" में कभी टार्ज़न की कहानियाँ छापी हैं? अगर नहीं तो कभी छापेंगे?

नहीं, अभी छापने का इरादा भी नहीं है।

१०. सकतानन्द, सुजानगढ़

"काँसे का किला" नामक धारावाहिक पुस्तक रूप में प्रकाशित हो गई है?

अभी तो नहीं।

Photo by B. Bhansali

पुरस्कृत परिचयोक्ति

लगती है जापानी गुड़िया!

प्रेषक: राम कपूर - कलकत्ता

Photo by Pranlal K. Patel

पुरस्कृत परिचयोक्ति

रूप सजाया कितना बढ़िया!!

प्रेषक: राम कपूर - कलकत्ता

अन्तिम पृष्ठ

दुश्शासन को मारकर, उसका खून पीने के बाद, भीम को देखकर लोग चकित हो गये। भीम ने कृष्ण और अर्जुन से कहा—"दुश्शासन के बारे में मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, वह पूरी हो गई है। दुर्योधन के बारे में जो प्रतिज्ञा की है, वह भी पूरी करूँगा।"

इस बीच उत्तमन्यु ने कर्ण के भाई चित्रसेन को मार दिया। कर्ण का लड़का वृषसेन बहुत पराक्रमपूर्वक नकुल से लड़ा। उसे विरथ भी कर दिया। अर्जुन ने वृषसेन के धनुष, हाथ और सिर अपने बाणों से काट दिये।

कर्ण दुःखित हो, अपने लड़के के रथ के पास गया। उसके शव को देखकर अर्जुन के पास गया। यह देख कि उन दोनों में द्वन्द्व युद्ध होनेवाला था और सब अपना अपना काम छोड़कर वाद विवाद करने लगे कि कौन जीतता है।

कर्ण, शल्य, कृष्ण और अर्जुन ने अपने अपने शंख बजाये। कृष्ण और शल्य एक दूसरे को घूर घूरकर देखने लगे। कर्ण ने हँसते हुए शल्य से पूछा—"यदि मैं इस युद्ध में हार जाऊँ तो सच बताओ तुम क्या करोगे?"

"अर्जुन ने यदि तुम्हें मारा तो मैं कृष्ण और अर्जुन दोनों को मार दूँगा।" शल्य ने कहा। अर्जुन के भी यह प्रश्न करने पर कृष्ण ने कहा—"पृथ्वी उलट जाय परन्तु तुम्हें कर्ण नहीं मार सकता। यदि तुम मारे भी गये, मान लो, तो मैं खाली हाथों से कर्ण और शल्य दोनों को मार दूँगा।"

फिर कर्ण और अर्जुन में भयंकर युद्ध होने लगा।

कर्ण के पास भयंकर सर्पमुख बाण एक था। जब उसने उसका उपयोग किया, तो कृष्ण ने अर्जुन का रथ भूमि में गाड़ दिया। घोड़े हिनहिनाये। बाण, अर्जुन के मुकुट को गिराता चला गया। फिर कृष्ण ने उतरकर अपने कन्धे से रथ उठाया। होते-होते अर्जुन युद्ध में जीतने लगा। कर्ण बुरी तरह घायल हो गया। समय पर उसको भार्गव अस्त्र भी याद न रहा और रथ के चक्र भी भूमि में फंस गये।

कर्ण ने अर्जुन से रथ का चक्र ऊपर निकालने के लिए दो घड़ी समय माँगा। तब तक उनसे उससे बाण न छोड़ने के लिए कहा। परन्तु कृष्ण ने अर्जुन से कहा—"इसने हमेशा अधर्म का ही समर्थन किया है। इसके प्रति धर्म के पालन की आवश्यकता नहीं है।"

कर्ण ने उस स्थिति में ही अर्जुन पर प्रहार किया। अर्जुन का गाण्डीव गिर गया। उसी समय कर्ण अपने रथ को उठाने के लिए उतरा।

"इससे पहिले कि यह फिर रथ पर चढ़ सके, इसका सिर काट दो।" कृष्ण ने कहा। अर्जुन ने एक तेज बाण छोड़ा और कर्ण का सिर कटकर नीचे गिर गया।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अक्तूबर १९६१ :: पारितोषिक १०)
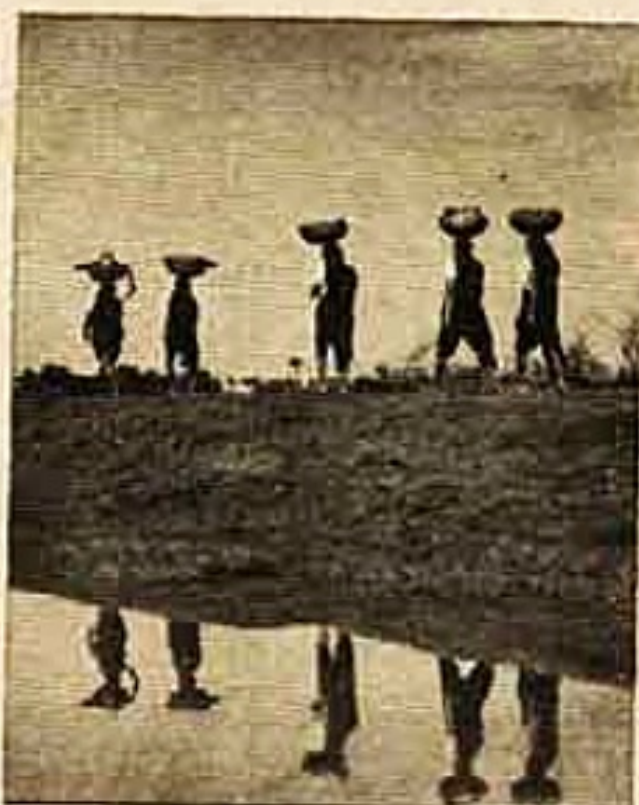
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७ अगस्त '६१ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता,
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अगस्त - प्रतियोगिता - फल

अगस्त के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **लगती है जापानी गुड़िया !**
दूसरा फ़ोटो : **रूप सजाया कितना बढ़िया !!**

प्रेषक : राम कपूर C/o श्री तिलकराज कपूर, १० सुरेन्द्रलाल मित्र रोड, कलकत्ता.

चित्र-कथा

एक रोज दास और वास से चरवाहे लड़के ने कहा कि उस शरारती लड़के को, जो भेड़ चुराने आया था, उसने मन्त्र पढ़कर बकरी बना दिया था। दास और वास को विश्वास न हुआ। "तो आकर तुम देख लो।" चरवाहे ने कहा। वे झाड़ियों के पास गये। एक छोटी-सी बकरी पत्ते खा रही थी। चरवाहे की मन्त्र शक्ति पर वे चकित हो रहे थे कि टाइगर ने उसका पैर पकड़ लिया। वह सिर पर बाँधे सींग और ओढ़े हुए बकरी के चमड़े को छोड़कर भागा।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private, Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

सुगंध
फैलता है
रेमी
स्नो और पाउडर
Remy
Remy